मूल्य: 20/-

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो जिंदगी

वर्ष–1, अंक: – 2 मई, 2024

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

फणीश्वरनाथ रेणु की वजह से पहली बार मैंने पी ली थी : कृष्णानंद
भूतपूर्व सहायक संपादक, इंडियन नेशन, पटना

दूसरे चरण के मतदान के साथ ही देश में करीब 35 प्रतिशत लोकसभा चुनाव सम्पन्न

मध्य प्रदेश के रीवा में बनी हिन्दी फिल्म 'धर्म योद्धा' रिलीज के लिए तैयार

भोजपुरी सिनेमा का सफर

भारतीय चुनाव का असर यूनाइटेड किंगडम के प्रवासी भारतीयों पर

RNI No.: BIHHIN/2023/86004

(कला–संस्कृति और सामाजिक चेतना का स्वर)

बोलो ज़िंदगी

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष–1, अंकः –2 मई, 2024

संपादक : **राकेश कुमार सिंह**
सहायक संपादक : **अमलेंदु कुमार**
प्रबंध संपादक : **प्रीतम कुमार**
सलाहकार संपादक : **मनोज भावुक**
कंप्यूटर ग्राफिक्स : **संजय कुमार**
कानूनी सलाहकार : **अमित कुमार**
प्रचार–प्रसार : **अनिल कुमार**
राकेश कुमार 'छोटू'
(ब्यूरो प्रमुख)
मुंबई : **अमृत सिन्हा**
नई दिल्ली एवं कोलकाता : **उज्ज्वल कुमार झा**
उत्तर प्रदेशः **दिवाकर शर्मा**
मध्य प्रदेशः **विजय मिश्रा**

BIHHIN/2023/86004

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार सिंह द्वारा अन्नपूर्णा ग्राफिक्स, C/O जय दुर्गा प्रेस, बिहाइंड गुलाब पैलेस, आर्य कुमार रोड, पटना, बिहार–800004 से मुद्रित एवं 3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001 से प्रकाशित ।
संपादक : **राकेश कुमार सिंह**

संपादकीय कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. – 7903935006/7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail-com

रजि. कार्यालय
3/8, देवकुमारी भवन, प. बोरिंग केनाल रोड, आनंदपुरी, पटना, बिहार – 800001.
मो. : 7903935006 / 7870110114
ई मेल : bolozindagi@gmail.com

मुंबई कार्यालय :
एक्सप्रेस जोन, मलाड, पंच बावड़ी, मलाड ईस्ट, मुंबई, महाराष्ट्र– 400097.
मो.– 9386134769.

सभी विवादों का निपटारा पटना की सीमा में आनेवाली सक्षम अदालतों में किया जाएगा।

भारतीय चुनाव का असर यूनाइटेड किंगडम के प्रवासी भारतीयों पर

7

1. पर्यावरण बचे तो प्राण बचे 2
2. फणीश्वरनाथ रेणु की वजह से पहली बार मैंने पी ली थी 3
3. एक्टिंग और कैमरा को लेकर जो मन में हिचक थी खत्म हो गई 6
4. इच्छा शक्ति, अहंकार एवं बाहुबल के अधिष्ठाता राहु 6
5. लोकसभा चुनाव 8
6. भोजपुरी सिनेमा का सफर 10
7. वेजिटेरियन होते हुए नॉनवेज खाना महँगा पड़ गया 15
8. लखनऊ में 'रजाकार साइलेंट जेनोसाइड ऑफ हैदराबाद' की स्टार कास्ट ने फिल्म का किया प्रचार 16
9. मध्य प्रदेश के रीवा में बनी हिन्दी फिल्म 'धर्म योद्धा' रिलीज के लिए तैयार 17
10. नताशा सूरी अपनी आने वाली फिल्म 'टिप्सी' की रिलीज को लेकर बेहद हैं उत्साहित 17
11. शादी डॉट कॉम (कहानी) 18
12. बिखरे ना परिवार हमारा (कविता) 19
13. हे मतदाता ! हे राष्ट्र निर्माता ! (कविता) 19
14. जीवन जीने की कला 20
15. आज खेल एक फैशन बन गया है : बद्री प्रसाद यादव 21
16. ग्रीष्म ऋतु के टेस्टी पेय 32

पर्यावरण बचे तो प्राण बचे

पानी, पेड़, पहाड़ पृथ्वी की धड़कनें हैं, इन्हें बचाएंगे तो उपहार में सांसें पाएंगे। 22 अप्रैल को हम पृथ्वी दिवस मनाते हैं और 5 जून को पर्यावरण दिवस। एक दिन की जागरुकता और शेष दिन की शून्यता धरती का बचाने के लिए नाकाफी है। हमें रोज कुछ–कुछ जोड़ना होगा। पानी बचाना होगा, पेड़ लगाने होंगे। हर आदमी अपने और अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन पर अगर पेड़ लगाए तो पानी, पेड़ और पहाड़ के क्षरण की विकराल होती समस्या को हम काफी हद तक कम कर सकते हैं। ग्लोबल वार्मिंग का खतरा भी कम किया जा सकता है। गंगा नदी जिसे हम मां की तरह पूजते हैं लेकिन उसके साथ व्यवहार बिल्कुल विपरीत करते हैं। उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल राज्यों से होकर पवित्र गंगा बहती है। गंगा में इन पांच राज्यों से कुल 10,139.3 मिलियन लीटर सीवेज प्रति दिन मिलता है। इसमें ट्रीटमेंट के जरिये महज 3,959.16 एमएलडी सीवेज यानी 40 फीसदी का ही शोधन होता है। ये चिंता का विषय है और आने वाले दिनों में इससे शुद्ध जल की गंभीर समस्या उत्पन्न हो सकती है। दुनिया में रूस–यूक्रेन और इजराइल–फिलिस्तीन के बीच युद्ध में जितने टन विस्फोट धरती पर गिराये जा रहे हैं, भविष्य में उसके परिणामों का आकलन कौन करेगा। चेतनशील लोगों, बुद्धिजीवियों और युद्ध की लकीर लंबी करने वाले नेताओं को धरती के हित में सोचना होगा।

राकेश कुमार सिंह
संपादक

फणीश्वरनाथ रेणु की वजह से पहली बार मैंने पी ली थी

—कृष्णानंद
भूतपूर्व सहायक संपादक,
इंडियन नेशन, पटना

मेरा जन्म बिहार के गया में हुआ। मेरी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। उस जमाने में जब महिलाएं पढ़ना–लिखना नहीं जानती थीं मेरी माँ मिडिल पास थी। जब मैं 8 वीं – 9 वीं में था मुझे याद है पिता जी माँ के पढ़ने के लिए लाइब्रेरी से साहित्य की किताबें लाया करते थें। माँ जब काम कर रही होतीं तो मैं वो किताबें लेकर पढ़ने बैठ जाता था। और बचपन में ही मैंने शरतचंद्र, बंकिमचंद्र और प्रेमचंद सबकी किताबें पढ़ ली थीं। शायद इसी वजह से साहित्य के प्रति मेरी रूचि जगी और लिखने की प्रवृति ने जन्म लिया. इंटर मैंने गया कॉलेज से किया. गया कॉलेज खोलने वाले सज्जन हमारे पिता के मित्र थें. वे पिता जी से बोले– 'हम कॉलेज खोल रहे हैं और घर का लड़का पढ़ने पटना जायेगा।' फिर पिता के कहने पर मैंने वहीँ से आई.ए. में एडमिशन कराया. आई.ए. में तब के शिवनंदन बाबू बहुत नामी हिन्दी के प्रोफेसर थें जो बाद में पटना कॉलेज चले गए. उन्होंने इंटर यूनिवर्सिटी स्टोरी कम्पटीशन आयोजित करवाया था जिसमे मेरी कहानी को प्रथम पुरस्कार मिला. कहानी का शीर्षक था 'थप्पड़–ए– इश्क'।

उसके बाद मैं पटना कॉलेज से हिन्दी ऑनर्स में ग्रेजुएशन करने चला आया। ऑल इण्डिया रेडियो, पटना से बहुचर्चित नाटक लोहा सिंह लिखने और लोहा सिंह का किरदार निभानेवाले रामेश्वर सिंह कश्यप तब मेरे क्लासमेट थें और हम दोनों हिन्दी ऑनर्स क्लास में अगल–बगल बैठते थें. देवेंद्र नाथ शर्मा जो बाद में वाइस चांसलर भी हुए थें तब एक दिन क्लास में हिन्दी में अलंकार पढ़ा रहे थें। उसी दरम्यान रामेश्वर सिंह कश्यप ने एक कविता बनाकर सुनाई जो आज भी मुझे याद है। उस वक्त कंडोम फ्रेंच लेदर कहलाता था और नया नया निकला था. कविता कंडोम पर आधारित थी कि 'एक लड़की भड़की, जब लड़के ने कहा, छूट गयी थैली रबड़ की।' सुनकर मुझे जोर की हंसी आ गयी तभी प्रोफेसर साहब ने हमें देख लिया और सोचा कि गप्प कर रहे हैं तो हम दोनों पर बहुत बिगड़े। कुछ ही महीनों बाद वहां साइकोलॉजी का नया विभाग खुल गया तो हम भी आकर्षित होकर हिन्दी ऑनर्स छोड़कर उसमे चले गए. उसके पहले फर्स्ट टर्मिनल एक्जाम में रामेश्वर कश्यप फर्स्ट और मैं सेकेण्ड आया था. फिर पटना यूनिवर्सिटी में हम साइकोलॉजी के फर्स्ट बैच के स्टूडेंट बनें. बी.ए. के बाद मैंने एम.ए. भी किया।

पटना कॉलेज में 26 जनवरी 1950 के दिन पहला रिपब्लिक डे सेलिब्रेशन हुआ जिसमे पटना कॉलेज के फाइन आर्ट सोसायटी का सेक्रेट्री मैं था और प्रेसिडेंट थें एस.के.घोष जो इंग्लिश के एवर ग्रीन प्रोफेसर कहलाते थें। उसी के तहत आर्ट कम्पटीशन ऑर्गेनाइज हुआ था जिसमे मैंने अपनी पत्नी का प्रोट्रेट बनाया था. तब तक मेरी शादी हो चुकी थी. मेरी शादी 27 मई 1948 में आजादी के 9 महीने बाद हुई थी. पटना कॉलेज फाटक के सामने एक बहुत बड़े फेमस आर्टिस्ट थें जिनकी प्रोट्रेट पेंटिंग की दुकान थी। जब मेरा पीरियड नहीं रहता तो उन्हीं के पास बैठकर उनसे मैं प्रोट्रेट बनाना सीखा करता था। तो उस कम्पटीशन में प्रोट्रेट बनाने में मैं और लैंडस्केप में शिवेंद्र सिन्हा फर्स्ट आये। फाइन आर्ट सोसायटी का सेक्रेट्री तो मैं था लेकिन हर क्लास का एक रिप्रजेंटेटिव भी चुना जाता था। शिवेंद्र क्लास का रिप्रजेंटेटिव होने के लिए प्रेसिडेंट एस.के.घोष के पास नामांकन देने गया तो उन्होंने कहा कि अपना फॉर्म सेक्रेट्री को दे दो। जब शिवेंद्र ने कहा कि 'हम उन्हें नहीं पहचानते हैं' तो प्रेसिडेंट साहब बोले 'कृष्णानद को नहीं पहचानते हो? कॉलेज में घूम जाओ और जिसके गले में सबसे सुन्दर टाई लटकी हो उसके हाथ में फॉर्म थमा देना।' फिर शिवेंद्र सिन्हा आया और मुझसे बोला– 'आप ही कृष्णानंद हैं ना, मुझे प्रेसिडेंट साहब ने आपके पास भेजा है।' शिवेंद्र

सिन्हा पटना के रीजेंट सिनेमा के मालिक का भाई था जो पटना कॉलेज में पढ़ने के बाद बी.बी.सी. लन्दन चला गया. वहां से लौटने के बाद जब दिल्ली में दूरदर्शन की स्थापना हुई तो पहला प्रोड्यूसर वही बना। उसने एक फिल्म बनायी थी जिसे तब नेशनल अवार्ड मिला था। दूसरी फिल्म उसने बनाई 'किस्सा कुर्सी का' जो इंदिरा गाँधी पर आधारित थी और कंट्रोवर्सियल हो जाने की वजह से रिलीज ही नहीं हो पायी। दिल्ली दूरदर्शन में एक्जक्यूटिव के पोस्ट पर हमारे एक साढ़ू थें किरण जी. जब एक दफा मैं दिल्ली गया तो किरण जी के यहाँ ही ठहरा था और उनसे मिलने जब शिवेंद्र पहुंचा तो हमारे साढ़ू बोले 'आओ तुम्हें हम पटना के एक जर्नलिस्ट से मिलवाते हैं।' मेरा नाम सुनते ही शिवेंद्र बोला 'उनसे हमें मिलवाइयेगा, उन्हीं के पद चिन्हों पर चलते हुए तो हम आज इस पोस्ट पर पहुंचे हैं.'

मुझे फिल्में बनाने का भी शौक था। सर्विस करने के दौरान ही 1978 में मैंने ब्लैक एन्ड वाइट शार्ट फिल्म 'पाबन्दी' बनायीं जो पुरुषों की नसबंदी पर थी। इंडिया गवर्नमेंट ने उसके 64 प्रिंट खरीदें और गांव देहात में प्रचार किया। फिर दूसरी कलर फिल्म बनाई 1980 में 'सुरा, स्वप्न और सत्य' जो शराबबंदी पर थी। दो शॉर्ट फिल्मों के बाद हम फुललेंथ की फिल्म बनाना चाह रहे थें. सबकुछ सेट हो गया था, पी.एल.संतोषी तब के बहुत बड़े डायरेक्टर मेरी फिल्म को डायरेक्ट करने वाले थें। 'रूप,रोटी और रुपया' स्टोरी भी उन्हीं की लिखी हुई थी। म्यूजिक डायरेक्टर थीं उषा खन्ना और इन सबको साइन करके मैं जब मुंबई से पटना आया तो जिन लोगों ने मुझे फाइनेंस करने का वायदा किया था वो

कृष्णानंद जी द्वारा खींची गयी मशहूर फिल्मी हस्तियों की तस्वीरें

पीछे हट गए और फिर फिल्म नहीं बन पायी। तब इंडिया के सभी आर्टिस्ट मुझे जानते थें। सोनल मान सिंह से लेकर बिस्मिल्ला खां सभी की मैंने फोटो खींची थी अपनी स्टोरी के लिए। पहले जमाने में मैटर की किल्लत रहती थी, बाजारवाद नहीं था। पहले जैसे नेहरू जी का भाषण आ गया तो हमलोगों को फायदा होता था कि सिर्फ इंट्रो बना दिया और पूरा भाषण छाप दिया। पहले डांस–ड्रामा जो होता था तो उसके ऑर्गनाइजर सिर्फ एक पैरा में न्यूज भेज

देते थें कि फलां ड्रामा हुआ और फलां –फलां ने पार्टिशिपेट किया. तब हम खुद जाकर ड्रामा देखना शुरू किये और उसपर बड़े–बड़े आर्टिकल निकालने लगें. उसके बाद नाटकों की बाढ़ आनी शुरू हो गयी, बहुत सी संस्थाएं कायम हो गयीं। और सब चाहते थें कि मैं ही आकर रिपोर्टिंग करूँ। जिस फंक्शन में मैं नहीं जा पाता वो मायूस हो जाते थें। फिर भी जो वहां गए थें उनसे पूछकर मैं उनका कमेंट छाप देता था। हर साल होनेवाले फिल्म फेस्टिवल में बिहार से मैं ही बुलाया जाता था। 1969 से 1984 तक जितने फिल्म फेस्टिवल हुए मैंने सब अटैंड किये. उसी दरम्यान बहुत से अभिनेताओं–अभिनेत्रियों के फोटो खीचा मैंने।

एक बार दिल्ली के अशोका होटल में बॉबी फिल्म की पार्टी चल रही थी और मैं राजकपूर जी के साथ एक टेबल पर बैठा था. मेरे सामनेवाले टेबल पर ऋषि कपूर और नीतू सिंह दोनों बैठकर एक ही प्लेट में खा रहे थें। मैंने फोटो लेने की कोशिश की तो उन्होंने देख लिया और चेहरा छुपा लिया। फिर मैंने भी अपना कैमरा नीचे छुपा लिया और बात करते–करते मौका देखकर चुपके से उनकी फोटो खींच ली जो तब अखबार में छपी भी थी। उन दिनों बिहार में फिल्म डेवलपमेंट कॉरपरेशन के लिए हमने लिखना शुरू किया कि सब जगह है बिहार में ये नहीं है। एक बार प्लानिंग कमीशन के जो सेक्रेट्री थें उन्होंने कहा कि फिल्म बेकार और वाहियात चीज है. यह बात हमको उनके ही आदमी ने बता दिया कि सब कमेंट आपके खिलाफ गया है। तो हमने उस कमेंट का जो पॉइंट था उसका जवाब छाप दिया। जगन्नाथ मिश्रा दुबारा जब बिहार के मुख्यमंत्री बनें तो उनके ज्वाइन करने के पहले हमने एक लेख छापा ' एन ओपेन लेटर टू चीफ मिनिस्टर एन्ड इंडस्ट्री मिनिस्टर' और उसमे फिल्म डेवलपमेंट कॉरपरेशन की वकालत की गयी थी। एक बार रविंद्र भवन में एक फंक्शन के दौरान मैं बैठा हुआ था तो जगन्नाथ मिश्रा जी मेरे पास आये और बोले 'कृष्णानंद जी, आपकी बात हमने मान ली है।' फिर बिहार में फिल्म डेवलपमेंट कॉरपरेशन की शुरुआत हुई. उसके जो सेक्रेट्री बने वो हमारे क्लास फ्रेंड थें। तब आर.एन. दास पटना के डी.एम.थें और बाद में एडुकेशन कमिश्नर भी बने। फिल्म में उनको भी बहुत इंट्रेस्ट था। तब दास जी मुझसे बोले कि 'आपका नाम कॉरपरेशन में आया था तो आपके दोस्त ने ही आपका नाम नहीं जाने दिया ये कहकर कि 'कृष्णानंद रहेगा तो हमलोगों को खाने–पीने नहीं देगा. हमेशा टोकते रहेगा कि ये काम नहीं हो रहा है वो नहीं हो रहा है। इसलिए उसका नाम ही काट दो।'

तब कॉरपरेशन सिर्फ नाम का था, कुछ काम नहीं होता था। सारा पैसा कहाँ चला जाता पता ही नहीं चलता था। पहले मैंने बतौर सब एडिटर 'सर्चलाइट' ज्वाइन किया था फिर कुछ ही दिनों बाद 'इंडियन नेशन' में मैगजीन एडिटर ज्वाइन कर लिया. मेरा ससुराल वैसे तो गया में है लेकिन चूँकि मेरे ससुर एडवोकेट थें और जब वे पटना हाईकोर्ट शिफ्ट हुए तो पटना के लोहानीपुर में घर बना लिया। उन्हें कोई बेटा नहीं था इसलिए उन्होंने मुझसे कहा कि आप मेरे साथ ही रहिये। मेरी पत्नी पांच बहन थी और जब सबका परिवार बढ़ने लगा तो हमने रिक्वेस्ट किया कि हमें अलग रहने जाने दीजिये। फिर पत्नी के साथ नालारोड किराये के माकन में चला आया।

एक बार का वाक्या है कि राजेंद्रनगर में लेखक फणीश्वरनाथ रेणु रहते थें जिनसे मेरी दोस्ती थी। वे एक बार रिक्शा से आ रहे थें तो मुझे नालारोड में देखकर पुकारे फिर सामने आने पर कहे कि 'चलिए आज आपको 'सेंट्रल' ले चलते हैं। सेन्ट्रल एक होटल था रिजर्व बैंक के पास तो मैंने सोचा कि वहां ले जाकर कुछ खिलाएंगे। लेकिन 'सेंट्रल' गया तो देखा वहां शराब पीने की व्यवस्था है। मैं शराब पीता नहीं था तो मैंने कहा– ' रेणु जी, मैं नहीं पीता।' वे बोले– 'जब आये हैं और साथ नहीं दीजियेगा तो हम भी नहीं पीयेंगे, इसलिए साथ दीजिये।' मैंने कहा– ' अच्छा तो ठीक है, दो बून्द ग्लास में गीरा दीजिये और उसमे पानी मिला दीजिये।' वे बोले– ' ऐसे नहीं ना होता है' और जिद करके हमको पिला दिए। पहले एक पैग पीकर हम मना किये तो वे बोले 'क्या कृष्णानंद जी, मतलब हमको भी नहीं पीने दीजियेगा. आपका ग्लास खाली रहेगा तो हम कैसे पीयेंगे?' ऐसे करते करते मुझे दो–तीन पैग पिला दिए। मेरा माथा घूमने लगा. घर जाते जाते सीढ़ी के नजदीक हम उल्टी करने लगें। रेणु जी बोले– 'आप बेकार आदमी हैं, अब आपके साथ कभी सेंट्रल नहीं जायेंगे।' मैंने कहा– 'हम खुद ही नहीं जायेंगे।' तब रेणु जी की कहानी 'तीसरी कसम' की शूटिंग हो चुकी थी और फिल्म रिलीज होनी बाकी थी। रेणु जी का नाम इतना था कि उनके साथ पीने की वजह से घर में पत्नी से मुझे डांट नहीं सुननी पड़ी थी।

प्रस्तुति : राकेश

❐

एक्टिंग और कैमरा को लेकर जो मन में हिचक थी खत्म हो गई

—गुंजन कपूर सिन्हा, अभिनेत्री

मेरी पहली फिल्म का नाम 'गंगा मिले सागर से' है। इससे पहले काफी म्यूजिक वीडियो में काम किया था। लेकिन एक्टिंग का यह पहला अनुभव था। पहली बार कैमरा फेस करते वक्त बहुत नर्वस थी. पहला सीन देवरिया के एक छोटे से गांव में शूट किया गया। कैमरा, लाइट सब रेडी होने के बाद जब मुझे शॉट देने के लिए बुलाया गया तो समझ नहीं आ रहा था कि एक्टिंग कैसे हो पायेगी मुझसे, कैसे डायलॉग डिलीवरी दूंगीट मुझे तो एक्टिंग का ए भी नहीं आता था। मैं अपना आत्मविश्वास ही खो चुकी थी। फिर डायरेक्टर ब्रजभूषण जी जो अब मेरे ससुर हैं उन्होंने मुझे सीन समझाया और एक्टिंग को लेकर कम्फर्टेबल किया। और एक सहज और छोटे से सीन के साथ शूटिंग शुरू की गई। जैसे ही मैंने अपना पहला शूट दिया तो वहां खड़े सारी यूनिट के लोगों ने और जो शूटिंग देखने आये थें उन्होंने भी जोर से तालियां बजानी शुरू कर दीं। मुझे बहुत अच्छा लगा। इसके साथ ही एक्टिंग और कैमरा को लेकर मेरे मन में जो भी हिचक– घबराहट थी वो भी खत्म हो गई. बाद में इस फिल्म को बेस्ट भोजपुरी फिल्म का अवार्ड भी मिला और मुझे बेस्ट एक्ट्रेस के अवार्ड से नवाजा गया। आज मैं कितनी ही फिल्मों में काम कर चुकी हूँ फिर भी अपनी पहली फिल्म और पहली शूटिंग को कभी नहीं भूलती। वो फिल्म मेरे दिल के बहुत करीब है और हमेशा रहेगी।❐

ग्रह–गोचर

इच्छा शक्ति, अहंकार एवं बाहुबल के अधिष्ठाता राहु

✍ उमेश उपाध्याय
आध्यात्मिक एवं ज्योतिष विशेषज्ञ

भारतीय ज्योतिष में राहु को एक छाया ग्रह माना गया है इसलिए इन्हें देखा नहीं जा सकता है वरन इनके प्रभाव का अनुभव किया जा सकता है।

राहु को उत्प्रेरक ग्रह भी माना गया है खासकर अशुभ ग्रहों जैसे मंगल शनि आदि के लिए उत्प्रेरक का कार्य करते हैं।

छाया ग्रह होने के कारण जिस ग्रह के साथ बैठते हैं या जिस ग्रह की राशि में हो उसी के अनुरूप फल देते हैं। उदाहरण स्वरूप पानी को जिस बर्तन में रखा जाता है वह उसी का आकार ग्रहण कर लेता है।

राहु आकृति में सर्प मुखाकार रेखा सदृश, तीक्ष्ण, म्लेच्छ वर्ण, तमोगुण दक्षिण पश्चिम दिशा के स्वामी एवं एक वृद्ध पाप ग्रह हैं।

राहु एक राशि में डेढ़ वर्ष तक रहते हैं। पाप ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि करते हैं तथा यह अचानक अप्रत्याशित फल भी प्रदान करते हैं।

राहु का अशुभ फल होने पर पारिवारिक जीवन में कलह, कलेश पैदा करते हैं तथा संबंध विच्छेद या तलाक की स्थिति भी पैदा करते हैं। भौतिक सुख सुविधाओं में कमी करते हैं। साथ ही प्रतिष्ठा की भी हानि करते हैं।

कुंडली के तीसरे ,छठे ,10वे एवं 11 भाव में स्थित रहने पर इसके प्रभाव अच्छे भी होते हैं। राहु के अच्छे प्रभाव होने पर व्यक्ति को उच्च पद प्रतिष्ठा भी प्राप्त होती है। राजनीति में भी सफलता प्रदान करते हैं एवं उच्च शिखर पर पहुंचाते हैं। राहु के दूषित होने पर उनके शांति हेतु

उपाय:

(१) मां सरस्वती की उपासना करें,
(२) बहते जल में नारियल प्रवाहित करें,
(३) सफेद चंदन ललाट पर लगाये,
(४) बुजुर्गों की सेवा करें,
(५) जरूरतमंदों को कंबल आदि का दान करें एवं गरीबों को भोजन कराएं।

❐

भारतीय चुनाव का असर यूनाइटेड किंगडम के प्रवासी भारतीयों पर

✍ शरद कुमार झा
काउंसलर, बकिंघमशायर, लंदन

भारतीय मूल के निवासी दुनिया के किसी भी कोने में हों, अपनी जन्मभूमि के लिये प्रेम और देशभक्ति उनके रग रग में बसी होती है। उस पर से जब चुनाव का माहौल हो तो सारे घरों में एक उत्सव सा माहौल रहता है। टी वी हो, मोबाइल न्यूज ऐप या फिर लैपटॉप पे, नियम अनुसार तत्कालीन खबर पाना, सभी की सोच एक ही सन्देश की तरफ जागरूक रहता है, कि अब क्या विश्लेषण आनेवाला है।

कहीं पार्टी में जाइये तो वहाँ भी चुनाव ही के सन्दर्भ में चर्चा होते रहती है।

अभी हाल ही में लंदन मैराथन हुआ। उसमें भी हमारी प्रतिभासम्पन्न भारतीय नारी तिरंगे के डिजाइन वाली साड़ी पहन के मैराथन दौड़ में भाग ली। अभी कुछ ही दिन पहले यहाँ लीसेस्टर में एक कार रैली का भी आयोजन किया गया। दूर दूर से लोग उसमें भाग लेने आये। इंडियन जिम खाना, लंदन में तो कुछ ही दिन पहले एक पार्टी का भी आयोजन किया गया, जिसमें चुनाव का जश्न मनाया गया।

अलग अलग स्थानों में यहाँ समारोह, प्रीतिभोज और दावत तो जैसे आम बात सी हो गयी है। कई मिनिस्टर्स और उनके समर्थकों का आना जाना और उनके उपलक्ष्य में मीटिंग आयोजित करना एक सामान्य बात हो गयी है। नेहरू सेंटर लंदन, इंडियन हाई कमीशन एवं हर स्टेट की अपनी रजिस्टर्ड संस्था यहां स्थापित है, जिसके माध्यम से अलग अलग कार्यक्रम का आयोजन हर महीने किया जाता है। जब बात आती है भारत की राजनीति और इलेक्शन माहौल की, तो सबका ऐन्टेना खड़ा हो जाता है कि अब क्या महत्वपूर्ण सूचना दी जाएगी। भले ही भारत से भारतीय मूल के निवासी दूर परदेस में बसे हों, पर दिल और मस्तिष्क भारत की तरफ आकर्षित होता है। ओवरसीज फ्रेंड्स ऑफ बी जे पी संस्था द्वारा 28/04/2024 को लंदन में रन फॉर मोदी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, इसमें काफी समर्थक नजर आये। अलग अलग पार्टीज के समर्थक अपने मनपसंद पार्टी की उलब्धियों पर प्रकाश डालने के लिये विभिन्न प्रकार के आयोजन का व्यवस्थापन करते रहते हैं।

जब तक चुनाव ख़त्म न हो, तब तक लोग फिल्म देखना या क्रिकेट खेलना भी छोड़ दिये हैं। ऐसा लगता है जैसे चुनाव और उसके नतीजे में ही उनकी जिन्दगी बसी है।

बड़े ही कमाल की चीज होता है ये चुनाव। उम्मीदवार इसके खिलाड़ी होते हैं और प्रजातंत्र इसके श्रोतागण। हर लम्हां, हर गतिविधि पर नजर होता है चिंतनशील भारतवासियों का, कि अगले कार्यकाल में कौन संभालेगा देश का प्रशासन।

भारत की एकता और उसकी प्रतिष्ठा का सम्मान करना परम आवश्यक है। हम सब एक हैं और जब भारतवर्ष की रक्षा की बात आती है, तो हम शक्तिशाली रूप से खड़े रहेंगे भारत माँ की सेवा में। भारत माँ की जय, जय हिन्द। ❐

दूसरे चरण के मतदान के साथ ही देश में करीब 35 प्रतिशत लोकसभा चुनाव सम्पन्न- तीसरे चरण का मतदान 7 मई को होगा- चार जून को होगी मतगणना

✍ जितेन्द्र कुमार सिन्हा
पूर्व अध्यक्ष
बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन

लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण का मतदान 26 अप्रैल, 2024 को असम, बिहार, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, केरल, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, राजस्थान, त्रिपुरा, यूपी, पश्चिम बंगाल और जम्मू कश्मीर के इन सभी राज्यों की कुल 89 सीटों पर लोकसभा सीटों पर सम्पन्न हुआ।

40 लोक सभा सीटों वाली बिहार में, दूसरे चरण में 5 सीटों पर किशनगंज, कटिहार, पूर्णिया, भागलपुर एवं बांका में मतदान और उत्तर प्रदेश की 80 लोक सभा सीटों में से 8 सीटों पर अलीगढ़, अमरोहा, बागपत, बुलंदशहर, गौतम बुध नगर, गाजियाबाद, मथुरा और मेरठ में मतदान हुई।

बिहार के दूसरे चरण का मतदान प्रतिशत 58.58 रहा। सूत्रों की माने तो मतदाताओं में मतदान के लिए जोश नहीं देखा गया, इसका एक कारण भीषण गर्मी भी हो सकता है। ऐसे तो बिहार के किशनगंज में 57.02 प्रतिशत, कटिहार में 57.89 प्रतिशत, पूर्णिया में 61. 39 प्रतिशत, भागलपुर में 49.43 प्रतिशत और बाँका में 50 प्रतिशत मतदान हुआ है।

किशनगंज लोकसभा में विधानसभा अनुसार बहादुरगंज में 59.37 प्रतिशत, ठाकुरगंज में 58.44 प्रतिशत, किशनगंज में 52.73 प्रतिशत, कोचाधामन में 57.52 प्रतिशत, अमौर में 50.80 प्रतिशत और बैसी में 64.23 प्रतिशत मतदान हुआ।

कटिहार लोकसभा में विधानसभा अनुसार कटिहार में 57.89 प्रतिशत, कदवा में 50.01 प्रतिशत, बलरामपुर में 63.02 प्रतिशत, प्राणपुर में 54.63 प्रतिशत, मनिहारी में 52 प्रतिशत और बरारी में 61.49 प्रतिशत मतदान हुआ। पूर्णिया लोकसभा में विधानसभा अनुसार कस्बा में 63.50 प्रतिशत, बनमनखी में 59.10 प्रतिशत, रूपौली में 60.50 प्रतिशत, धमदाहा में 61.01 प्रतिशत, पूर्णिया में 61 प्रतिशत और कोरहा में 63. 51 प्रतिशत मतदान हुआ। भागलपुर लोकसभा में विधानसभा अनुसार बिहपुर में 48 प्रतिशत, गोपालपुर में 53 प्रतिशत, पीरपैंती में 47.19 प्रतिशत, कहलगाँव में 55.49 प्रतिशत, भागलपुर में 44.90 प्रतिशत और नाथनगर में 48.22 प्रतिशत मतदान हुआ। बाँका लोकसभा में विधानसभा अनुसार सुल्तानगंज में 47 प्रतिशत, अमरपुर में 41.89 प्रतिशत, घोड़ैया में 51.06 प्रतिशत, बाँका में 54.04 प्रतिशत, कटोरिया में 51.51 प्रतिशत और बेलहर में 50.01 प्रतिशत मतदान हुआ।

7 मई को तीसरे चरण में असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, कर्नाटक. मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, यूपी, पश्चिम बंगाल, दादरा एवं नगर हवेली और दमन

एवं दीव और जम्मू कश्मीर के सभी राज्यों की कुल 94 सीटों पर मतदान होंगे।

बिहार में तीसरे चरण में झंझारपुर, सुपौल, अररिया, मधेपुरा एवं खगड़िया, चौथे चरण में दरभंगा, उजियारपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय एवं मुंगेर, पांचवे चरण में सीतामढ़ी, मधुबनी, मुजफ्फरपुर, सारण एवं हाजीपुर, छठ्ठे चरण में वाल्मीकिनगर, प. चंपारण, पूर्वी चंपारण, शिवहर, वैशाली, गोपालगंज, महाराजगंज एवं सीवान और सातवें एवं अंतिम चरण में नालंदा, पटना साहिब, पाटलिपुत्र, आरा, बक्सर, सासाराम, काराकाट एवं जहानाबाद में मतदान होंगा।

एक तरफ मतदान शुरू है तो दूसरी तरफ राजनीतिक सियासत भी शुरू है। देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कहना है कि देश को बड़ी वैश्विक शक्ति बनाने के लिए अगले पांच साल महत्वपूर्ण है, इसलिए वैश्विक हालात से निपटने के लिए सक्षम सरकार जरुरी है। लोकतंत्र के उत्सव में भाग लेनेवाले सभी मतदाताओं का धन्यवाद। युवा और महिला मतदाता एनडीए की ताकत बनकर उभर रहे हैं। वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने कहा है कि भारत के लोकतंत्र और आने वाली पीढ़ियों का भविष्य तय करेगी, इसलिए एक एक वोट कीमती है, बाहर निकले और मतदान करें।

समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव का कहना है कि पहले दिन का शो भाजपा के लिए फ्लॉप हो गया है। दूसरे चरण में इंडिया गठबंधन के पक्ष में वोट डालने के लिए हर समाज और वर्ग में गजब का उत्साह देखा गया है। भाजपा के मतदाता कम हो रहे है। राकापा (पवार गुट) प्रमुख शरद पवार का कहना है कि अयोध्या के राम मंदिर का मुद्दा अब समाप्त हो गया है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का कहना है कि यह मामूली चुनाव नहीं है, यह देश और संविधान को बचाने वाला चुनाव है। अशोक गहलोत का कहना है कि देश में ऐसे हालात पैदा कर दिया गया है कि संयुक्त राष्ट्र को बोलना पड़ा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का कहना है कि कांग्रेस, बसपा और सपा देश की तमाम समस्याओं की जड़ है। कांग्रेस नेता भूपेश बघेल का कहना है कि भाजपा अपनी हार को भांप घबरा गई है। आज इनके समर्थक पुलिस से भीड़ गए तो जनता का क्या हाल करेंगे। जनता इन्हें जवाब देगी। वही कांग्रेस नेता अशोक गहलोत का मानना है कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम सब मिलकर न्याय की संकल्पना को साकार करते हुए सशक्त सरकार का गठन करने में सफल होंगे। भाजपा नेता शिवराज सिंह चौहान का कहना है कि जनता कांग्रेस के इरादे को कभी कामयाब नहीं होने देगी और भाजपा नेता तेजस्वी सूर्या का मानना है कि मतदान करने वाले अपनी जिम्मेदारी निभा रहे हैं। देशभर में युवा मतदाताओं में गजब का उत्साह है, ये विपक्षी दल को बड़ा संदेश है।

दूसरे चरण के मतदान के साथ ही देश में करीब 35 प्रतिशत लोकसभा चुनाव संपन्न हो गया है। कमोबेश मतदान शांतिपूर्ण चल रहा है और मतदान प्रतिशत भी चिंताजनक नहीं लगता है। दो चरणों के सभी उम्मीदवारों के भाग्य का फैसला ईवीएम मशीन में बंद हो गया है और 04 जून को फैसले का निर्णय सुनाया जायेंगा। प्रथम चरण की अपेक्षा दूसरे चरण में मतदान ज्यादा हुआ है। छोटे राज्यों में ज्यादा तेजी से और ज्यादा मतदान हुआ है। त्रिपुरा, मणिपुर, छत्तीसगढ़ में भी तेज मतदान हुआ है जो प्रशंसनीय है। बिहार में दूसरे चरण के मतदान के बाद भी सभी पार्टियाँ अपनी अपनी जीत के दावे करने में लगी हुई हैं। ❐

भोजपुरी सिनेमा का सफर

✍ मनोज भावुक
साहित्यकार, संपादक, कवि एवं टीवी पत्रकार

भोजपुरी सिनेमा की शुरुआत भले 1962 में रिलीज हुई पहली भोजपुरी फिल्म 'गंगा मईया तोहे पियरी चढइबो' से हुई थी। लेकिन भोजपुरी की धमक भारतीय सिनेमा में तभी हो गई थी, जब सिनेमा बोलने लगी थी। जी हाँ, 1931 में पहली बोलती फिल्म या टॉकी फिल्म आलम आरा बनी। उसी साल तीन अन्य फिल्में क्रमशः दौलत का नशा, नूरजहाँ और फरेबीलाल भी रिलीज हुई थीं, जिनमें भोजपुरी के गीत थे। फिल्म दौलत का नशा में गीतकार मुंशी सागर का लिखा एक मुजरा था – "गगरिया भरत न देय, हो बांके छैला"। नूरजहाँ फिल्म में एक गीत था – "जब से मोहन दरसवा देखाई गयो रे"। फरेबीलाल में भी एक गीत था – "बलमुआ साथी कहो मोसे बतिया"। दरअसल, फिल्मों में गीत संगीत के माध्यम से भोजपुरी अपनी राह बनाने लगा था।

भारतीय सिनेमा में भोजपुरी की धमक

शुरूआती दस साल अर्थात 1931–1939 में कई फिल्मों के गीत में अथवा संवाद में भोजपुरी भाषा के शब्द प्रचुरता में दिखाई देते हैं। मिसाल के तौर पर 1932 की फिल्म भर्तृहरि में, तीन गीत ऐसे हैं जिनका मुखड़ा भोजपुरी में है और अंतरा हिन्दी में। पहला गीत ''मन ना रंगावै, रंगावै जोगी कपड़ा'', दूसरा गीत ''उड़ि जा रे कारे कगवा नगर से हमरे'' और तीसरा गीत ''मर गई हाय रे मोरी दईया''। 1932 में बनी 'इंदरसभा' जो एक संगीत ओपेरा फिल्म थी और उसमें सर्वाधिक 70 गाने थे, यह विश्व रिकॉर्ड भी इस फिल्म के नाम है। इस फिल्म में गीत है, जो इन्द्र की सभा में एक अप्सरा गाती है, "महाराजा से नैना लड़इबै हमार कोई का करिहैं"। गाने का अंतरा भी भोजपुरी में था।

1939 की एक फिल्म 'पुकार' इसे कमाल अमरोही ने लिखा था और सोहराब मोदी ने निर्देशित की थी, उसमें एक धोबी गीत था, "छीयो राम छीयो... छीयो राम छीयो/कवन घाट तोर अउनन–सउनन, छीयो राम छीयो"। 1943 में महबूब खान के निर्देशन में बनी फिल्म 'तकदीर' में एक ठुमरी भोजपुरी भाषा में थी। यह गीत मशहूर गायिका, नृत्यांगना और भोजपुरी से अगाध प्रेम करने वाली जद्दनबाई की जिद पर ही फिल्म में रखी गई। इसके बोल थे – "बाबू दरोगा जी कवने करनवा बन्हले पियवा मोर"। दरअसल पूर्वी शैली के प्रणेता गीतकार महेंदर मिसिर के एक गीत में हेर फेर करके यह ठुमरी लिखी गई थी। गीतकार अशोक पिलीभीती ने ही वह बदलाव किए थे। रफीक गजनवी की संगीत पर शमशाद बेगम ने यह ठुमरी गाई थी, जो उस दौर में खूब प्रसिद्ध हुई थी। इस फिल्म में नायिका थीं प्रसिद्ध अभिनेत्री नरगिस और संयोग से यह उनकी डैब्यू फिल्म थी।

1946 की फिल्म धरती के लाल जिसे ख्वाजा अहमद अब्बास ने निर्देशित की थी उसमें साहित्यकार प्रोफेसर उमाकांत वर्मा का लिखा एक भोजपुरी गीत "केकर–केकर नांव बताई – ई जग बहुत लुटेरा हौ" भी शामिल था। 1948 में एक फिल्म आई 'नदिया के पार'। फिल्मीस्तान स्टूडियो की शुरुआती सफल फिल्मों में से एक इस फिल्म में दिलीप कुमार और कामिनी कौशल मुख्य भूमिका में थे। इस हिन्दी फिल्म को किशोर साहू ने लिखा, निर्देशित और निर्मित किया। फिल्म के संवाद छत्तीसगढ़ी प्रभाव में थे और गीत भोजपुरी में थे। फिल्म के सभी 8 गीत भोजपुरी में थे जिसे मोती बी.ए. ने लिखा। यह अजूबा था कि एक हिन्दी फिल्म में सारे गीत भोजपुरी में हो। मसलन, कुछ गीत "कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार", "दिल लेके भागा, दगा देके भागा, कवने बेदरदी से दिल मोरा लागा", "नजरिया में अइह, डगरिया में अइह, बजरिया में अइह हो संवरिया मोर" आदि खूब सफल हुए। जब बंबई में बन रही फिल्मों में बंगाली, उर्दू, पंजाबी, मराठी, गुजराती भाषा का माहौल था, तब भोजपुरी ने शानदार उपस्थिति दर्ज कराई।

1956 में एक फिल्म आइ 'टकसाल'। इस फिल्म में प्रेमधव बनारस के लोक गायक दुखरन के निर्गुण को एक गीत के रूप में ढाला। 1963 की फिल्म 'गोदान' में भी कई गीत भोजपुरी में थे। फिल्म 'चारदीवारी', 'तीसरी कसम', 'काला पानी', 'गंगा जमुना'

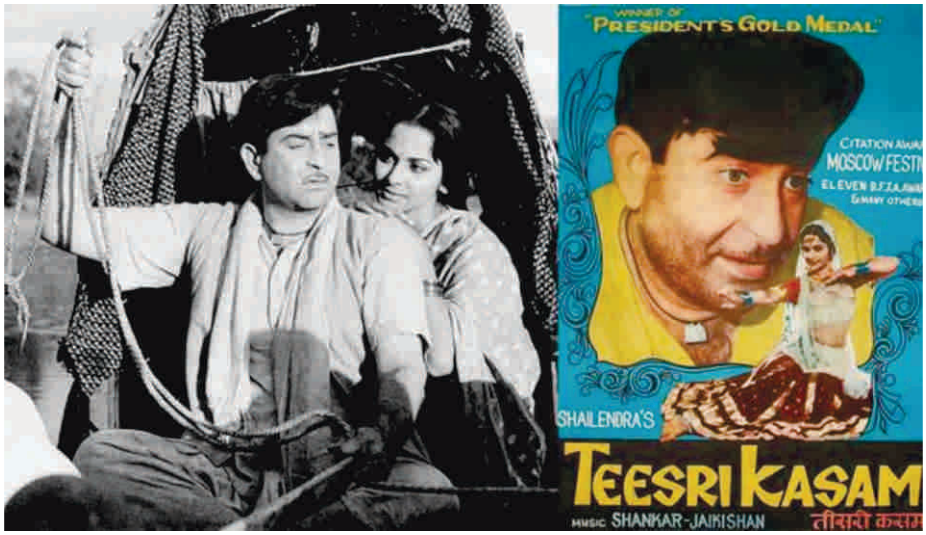

आदि में भी भोजपुरी भाषा में संवाद और गीत थे। फिल्म गंगा जमुना का गीत "नैन लड़ जइहें त मनवा मा कसक होइबे करी" तो अब भी लोगों की जुबान पर है। इसके इतर भोजपुरी कालांतर में भी कई फिल्मों के प्रसिद्ध चरित्रों की भाषा रही और गीतों में भी सुनने को मिली।

राष्ट्रपति ने किया पहली भोजपुरी फिल्म बनाने को प्रेरित

भोजपुरी में पहली फिल्म बनने से पहले इसकी संकल्पना फिल्म अभिनेता और पटकथा लेखक नाजिर हुसैन के मन में बहुत पहले ही आ गई थी। एक सम्मेलन के दौरान तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने उन्हें भोजपुरी फिल्म बनाने को प्रेरित किया। नाजिर हुसैन ने फिल्म 'गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो' की स्क्रिप्ट लिख ली और निर्माता की तलाश में लग गए। उन्हें निर्माता के रूप में विश्वनाथ शाहाबादी, निर्देशक के रूप में कुंदन कुमार, हीरो के लिए असीम कुमार और हिरोइन के लिए कुमकुम मिल गईं। सहायक कलाकारों में रामायण तिवारी, पदमा खन्ना, पटेल और भगवान सिन्हा जैसे हिन्दी सिनेमा के बड़े नाम भी जुड़ गए। गीत लिखने का जिम्मा शैलेंद्र को मिला और संगीत की जिम्मेदारी ली चित्रगुप्त जी ने। फिल्म बनी और 1962 में रीलीज हुई। पहले वितरक इस फिल्म को लेने से ना नुकुर कर रहे थे, बाद में वे इसका प्रिन्ट पाने के लिए धक्का–मुक्की करने लगे। यह फिल्म खूब चली, महीनों सिनेमा घरों में लगी रही और इस तरह भोजपुरी सिनेमा की शुरुआत हो गई।

पांच लाख की पूंजी से बनी 'गंगा मइया' ने लगभग 75 लाख रुपये का व्यवसाय किया। इसे देखकर कुछ व्यवसायी लोग भोजपुरी फिल्म को सोने के अंडे देने वाली मुर्गी समझने लगे। नतीजा ये निकला कि भोजपुरी फिल्म निर्माण का जो पहला दौर 1961 से शुरू हुआ, वो 1967 तक ही चला। इस दौर में दर्जनों फिल्में बनीं, लेकिन लागी नाही छूटे राम और बिदेसिया को छोड़ कर कोई भी फिल्म अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पायी। इन दोनों फिल्मों के गीत कमाल के थे। 1967 के बाद दस साल तक भोजपुरी फिल्म निर्माण का सिलसिला ठप रहा। 1967 से 1977 के अंतराल में जगमोहन मट्टू ने एक फिल्म मितवा भी बनायी, जो कि 1970 में उत्तर प्रदेश और 1972 में बिहार में प्रदर्शित की गयी। इस तरह से ये फिल्म पहले और दूसरे दौर के बीच की एक कड़ी थी। 1977 में बिदेसिया के निर्माता बच्चू भाई साह ने इस चुप्पी को तोड़ने का जोखिम उठाया। उन्होंने सुजीत कुमार और मिस इंडिया प्रेमा नारायण को लेकर पहली रंगीन भोजपुरी फिल्म दंगल का निर्माण किया। नदीम–श्रवण के मधुर संगीत से सजी 'दंगल' फिल्म व्यवसाय के दंगल में भी बाजी मार ले गयी।

1977 में प्रदर्शित दंगल की कामयाबी ने एक बार फिर नाजिर हुसैन को उत्प्रेरित कर दिया। उन्होंने राकेश पांडेय और पद्मा खन्ना को शीर्ष भूमिका में लेकर बलम परदेसिया का निर्माण किया। अंजान और चित्रगुप्त के खनखनाते गीत–संगीत से सुसज्जित 'बलम परदेसिया' रजत जयंती मनाने में सफल हुई। इससे प्रेरित होकर निर्माता अशोक चंद्र जैन ने दो फिल्में 'धरती मइया' और 'गंगा किनारे मोरा गांव' बनाई जिसने हीरक जयंती (डायमंड जुबली) मनायी। भोजपुरी फिल्म निर्माण का ये दूसरा दौर 1977 से 1982 तक चला। 1983 में 11 फिल्मे बनीं, जिनमें मोहन जी प्रसाद की 'हमार भौजी', 1984 में नौ फिल्में बनीं, जिसमें राज कटारिया की 'भैया दूज', 1985 में 6 फिल्में बनीं, जिनमें लाल जी गुप्त की 'नैहर के चुनरी' और मुक्ति नारायण पाठक की 'पिया के गांव', इसके अलावा 1986 में 19 फिल्में बनीं, जिनमें रानी श्री की 'दूल्हा गंगा पार के' हिट रही, जिन्होंने भोजपुरी फिल्म व्यवसाय को खूब आगे बढ़ाया।

भोजपुरी सिनेमा का नया युग

1982 से 2002 तक हालात ये हो गये कि कब फिल्म बनी और कब पर्दे से उतर गयी, इसका पता ही नहीं चलता था। ये समय भोजपुरी सिनेमा के लिए सबसे बुरा रहा। 2003 में मनोज तिवारी की ससुरा बड़ा पैसावाला के सुपर–डुपर

हिट होने के बाद भोजपुरी सिनेमा का कायाकल्प हो गया। 2003 के बाद के समय को भोजपुरी सिनेमा का नया युग या वर्तमान दौर कहा जाता है। 2003 में मनोज तिवारी और रानी चटर्जी अभिनीत फिल्म ससुरा बड़ा पैसावाला सुपर–डुपर हिट हुई। इसी समय (2002 में) मोहन जी प्रसाद ने रवि किशन को लेकर सैयां हमार और सैयां से कर द मिलनवा हे राम, दो फिल्में बनायी। दोनों फिल्मों ने अच्छा बिजनेस किया लेकिन मोहन जी प्रसाद की ही अगली फिल्म पंडित जी बताईं ना बियाह कब होई, सुपर–डुपर हिट हुई। फिर तो भोजपुरी सिनेमा की किस्मत ही जाग गयी। अमिताभ बच्चन, अजय देवगन, जूही चावला, मिथुन चक्रवर्ती जैसे हिंदी के नामी कलाकार भोजपुरी फिल्मों में काम करने लगे। भोजपुरी फिल्मों का बजट बढ़ गया और इसकी शूटिंग लंदन, मॉरिशस और सिंगापुर में होने लगी। इस दौरान हिंदी के कई बड़े निर्माता–निर्देशक सुभाष घई, सायरा बानो और राजश्री प्रोडक्शन जैसे ग्रुप भोजपुरी फिल्में बनाने के लिए अग्रसर हुए। रवि किशन और मनोज तिवारी के अलावा भोजपुरी सिनेमा के आकाश पर कई नये हीरो चमके। दिनेश लाल यादव निरहुआ, पवन सिंह, पंकज केसरी, विनय आनंद, कृष्णा अभिषेक और नयी हिरोइनों रानी चटर्जी, नगमा, भाग्यश्री, दिव्या देसाई, पाखी हेगड़े, रिंकू घोष, मोनालिसा, श्वेता तिवारी जैसे कलाकारों की दस्तक से भोजपुरी सिनेमा ने रफ्तार पकड़ लिया। इसी समय में कल्पना जैसी गायिका भी उभर कर आयी। साल 2009 भोजपुरी मनोरंजन जगत के लिए काफी चर्चा में रहा। एक लंबे इंतजार के बाद हमार टीवी व महुआ समेत भोजपुरी के कई चौनल आये। भोजपुरी फिल्म की ट्रेड मैगजीन भोजपुरी सिटी, भोजपुरी संसार समेत कई फिल्मी पत्रिका शुरू हुई। वहीं साल की सबसे बड़ी क्षति रही ससुरा बड़ा पैसवाला के निर्माता सुधाकर पांडेय की आकस्मिक मौत।

भोजपुरी सिनेमा 2010 से 2023 तक

साल 2010 भोजपुरी सिनेमा के लिए न तो बहुत अच्छा रहा, न ही बहुत खराब। मनोज तिवारी की फिल्म भोजपुरिया डॉन को अंतर्राष्ट्रीय फिल्म फेस्टिवल में जगह मिली थी। भोजपुरी के दो स्टार मनोज तिवारी और श्वेता तिवारी का बिग बॉस सीजन 4 में जाना भी हुआ था। 2010 में निर्माता प्रवेश सिप्पी की भोजपुरी फिल्म 'मृत्युंजय' पहली बार पूरे देश में एक साथ प्रदर्शित की गयी। अगर फिल्म वितरण के हिसाब से देखा जाए, तो देवरा बड़ा सतावेला, दाग, दामिनी, सात सहेलियां ने अच्छा बिजनेस किया था। इन सब फिल्मों ने दो करोड़ से तीन करोड़ तक का व्यवसाय किया। साथ ही भइया के साली ओढ़निया वाली, सैयां के साथ मड़ैया में, लहरिया लूट ए राजाजी, जरा देब दुनिया तोहरा प्यार में, आज के करण–अर्जुन और रणभूमि ने भी अच्छी कमाई की। निरहुआ की फिल्में तब खूब कमाती थीं और सिंगल स्क्रीन की तब प्रचुरता थी। पवन सिंह को तब फिल्मों में आए कुछ साल हुए थे और वह अपनी जगह बना रहे थे। देवरा बड़ा सतावेला, सैयां के साथ मड़ैया में और भइया के साली ओढ़निया वाली से पवन का मार्केट बढ़ा है।

वर्ष 2011 भोजपुरी सिनेमा के स्वर्णिम वर्ष के रूप में मनाया गया। कहीं भोजपुरी फिल्म अधिवेशन, कहीं भोजपुरी फिल्म अवार्ड तो कहीं भोजपुरी सिटी सिने अवार्ड, मतलब सालो भर भोजपुरी फिल्म उत्सव चलता रहा। दिल्ली में आयोजित विश्व भोजपुरी सम्मलेन में भी फिल्म पर विशेष सत्र रखा गया तो पटना में वर्ष के शुरुआत में हीं स्वर्णिम भोजपुरी के रूप में भोजपुरी सिनेमा पर तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें भोजपुरी फिल्मों के दिग्गजों ने

शिरकत किया। इस साल निर्देशक राजकुमार पाण्डेय की ट्रक ड्राईबर काफी सफल फिल्म रही। तभी उभरते गायक खेसारी लाल यादव ने साजन चले ससुराल फिल्म से डैब्यू किया था, आज वह सुपरस्टार हैं। असलम शेख ने अपने निर्देशन में एक अच्छी फिल्म 'औलाद' रिलीज की जो काफी सफल रही थी। लीक से हटकर बनी नीतू चंद्रा की फिल्म 'देसवा' खूब चर्चा में रही लेकिन बॉक्स ऑफिस पर उसे कामयाबी नहीं मिली। वही हाल निर्देशक किरण कान्त वर्मा की फिल्म हमार देवदास का हुआ. भोजपुरी में बनी देवदास लचर प्रस्तुतीकरण, अनाकर्षक सेट और धीमी गति के कारण फ्लाप हो गई। साहित्यिक कृति पर भी एक फिल्म बनी, 'सैंया डराईबर बीबी खलासी'। फिल्म साफ सुथरी थी लेकिन नाम देखकर लोगों को लगा कि मसाला फिल्म है। हालांकि यह फिल्म चल नहीं पाई।

वर्ष 2012 में प्रदर्शित हुई 55 फिल्मो में मात्र दो फिल्मे ही सुपर हिट साबित हुई जबकि दस फिल्मो ने औसत व्यवसाय किया। बाकी फिल्में दर्शको को खींचने में नाकाम साबित हुई। होली पर प्रदशित हुई रानी चटर्जी स्टार 'दुर्गा' ने पूरे बिहार, मुंबई में अच्छा व्यवसाय किया। इसी दिन रिलीज हुई रवि किशन – रानी चटर्जी स्टार 'कईसन पियवा के चरितार बा' और रवि किशन अक्षरा सिंह की प्राण जाये पर वचन ना जाये भी औसत व्यवसाय करने में सफल रही। भिखारी ठाकुर के लोकप्रिय नाटक 'बिदेसिया' पर आधारित फिल्म निरहुआ की मुख्य भूमिका में बनी लेकिन वह अपनी धीमे और प्रयोगवादी पटकथा के चलते बुरी तरह फ्लॉप हुई। खेसारी तब चमक रहे थे, उनकी फिल्म 'जान तेरे नाम' ने बिहार और यूपी में कई सिनेमाघर में 50 दिन से ऊपर का व्यवसाय किया। खेसारी की दो और फिल्में 'देवरे पर मनवा डोले' और 'दिल ले गईल ओढनिया वाली' दर्शकों को अपनी ओर खींचने में सफल रही। दरअसल खेसारी ने आते ही दर्शकों की नब्ज पकड़ ली, वह कॉमेडी और मसाला फिल्में ही कर रहे थे। पिछले तीस वर्षो से भोजपुरी सिनेमा के अग्रणी अभिनेता कुणाल सिंह को भारत के माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने भोजपुरी सिनेमा में उन्हें अमूल्य योगदान के लिए दिनकर साहित्य सम्मान 2012 से विभूषित किया। इसी वर्ष मैंने (मनोज भावुक) भी सौगंघ गंगा मईया के और रखवाला नामक दो फिल्मों में काम किया और भोजपुरी फिल्म निर्माण को बहुत करीब से देखा। यहाँ की मायावी दुनिया से रूबरू हुआ।

वर्ष 2013 में भोजपुरी सिनेमा के लिए मनोज तिवारी को राष्ट्रपति से सम्मान मिला। इस साल प्रदर्शित अच्छी फिल्मों में टाइगर, वर्दी वाला गुंडा, गोबर सिंह, प्रेम दिवानी, दिलदार सावरिया, सपूत, धुरंधर दि शूटर, तू ही तो मेरी जान है राधा, प्रतिघात, ए बलमा बिहार वाला, पंचायत, संसार, इज्जत, कोठा, कसम वर्दी के, दबंग मोरा बालमा और चुन्नू बाबू सिंगापुरी की चर्चा की जा सकती है।

2014 में भोजपुरी फिल्म जगत अपनी फिल्मों से ज्यादा कलाकारों के राजनीति में प्रवेश के लिए याद किया जाएगा। वर्ष 2014 में हुये लोकसभा चुनाव में भोजपुरी सिनेमा जगत के चार बड़े कलाकारों मनोज तिवारी, रविकिशन

,नगमा और कुणाल सिंह को टिकट दिया गया था। इनमें मनोज तिवारी को भाजपा से जबकि रविकिशन ,नगमा तथा कुणाल सिंह को कांग्रेस से टिकट दिया गया था। मनोज तिवारी उत्तर पूर्व दिल्ली की सीट से भारी मतो से विजयी हुये जबकि रविकिशन जौनपुर से, नगमा मेरठ से और कुणाल सिंह को पटना से हार का सामना करना पड़ा। इस साल लगभग 60 फिल्में प्रदर्शित हुईं जिसमें सफल गिनती की फिल्में रहीं। इस साल भी खेसारी लाल यादव का जोर फिल्म व्यवसाय पर चला और निरहुआ ने भी अपना दम दिखाया। अपनी बेहतरीन अदाकारी के लिए जानी जाने वाली रिंकू घोष इस साल कामयाबी की राह पर बरकरार थीं और राजकुमार पांडे की फिल्म नगीना और असलम शेख निर्देशित फिल्में 'औरत खिलौना नहीं' और 'खूनभरी मांग' में अपना शानदार प्रदर्शन किया। इसी साल मॉरीशस में आयोजित अंतरराष्ट्रीय भोजपुरी महोत्सव में भोजपुरी सिनेमा के इतिहास पर मनोज भावुक द्वारा बनाई गई डॉक्यूमेंट्री को भी प्रदर्शित किया गया। हालांकि इस डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन इससे पूर्व भारत में जेएनयू के सिनेमेला और विश्व भोजपुरी सम्मेलन में भी किया जा चुका था।

2015 में भोजपुरी फिल्मों को हिट कराने का एक नया ट्रेंड चल पड़ा। इस ट्रेंड का नाम है भोजपुरी फिल्मों का पाकिस्तान कनेक्शन। 2015 में सबसे पहले ऐसी कनेक्शन वाली पहली फिल्म थी 'पटना से पाकिस्तान'। इस फिल्म में दिनेश लाल यादव 'निरहुआ' के साथ आम्रपाली व काजल राघवानी थी। इसके एक साल बाद 2016 में फिल्म आई 'ले आईब दुल्हनिया पाकिस्तान से' और इस फिल्म में विशाल सिंह और तनुश्री की जोड़ी थी। इसी कड़ी में पवन सिंह की फिल्म गदर आई जिसमें भी पाकिस्तान कनेक्शन था, इसने अच्छा व्यवसाय किया था। प्रदीप पांडेय चिंटू की श्दुल्हन चाही पाकिस्तान सेश ने तो पिछली सभी फिल्मों की बिजनेस का रिकॉर्ड तोड़ा। दरअसल उन दिनों राष्ट्रवाद को लेकर जो माहौल समाज में बना था, भोजपुरी प्रोड्यूसर्स इस माहौल को कैश करने में लगे थे और उसका लाभ उन्हें मिला।

निरहुआ और पाखी हेगड़े की हिट जोड़ी बिखरने के बाद निरहुआ और आम्रपाली की जोड़ी ने कई सुपरहिट फिल्में दीं। निरहुआ हिन्दुस्तानी के तीन पार्ट्स और निरहुआ चलल ससुराल के दो पार्ट्स ने काफी अच्छा व्यवसाय किया जिससे पारिवारिक फिल्मों का फिर से सफल होने का दौर आया। डिजिटल युग आ गया था, इसलिए फिल्मों का डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी प्रदर्शित किया जाने लगा। इसी पीरियड में यश कुमार एक अच्छे अभिनेता के रूप में विकल्प बन कर सामने आए। उनकी फिल्म 'नागराज' फुलप्रुफ ग्राफिकल एक्शन फिल्म है। इसमें बड़े पैमाने पर एनिमेशन और ग्राफिक्स का सहारा लिया गया है। प्रियंका चोपड़ा ने अपना प्रोडक्शन हाउस खोला और पहली भोजपुरी फिल्म 'बम बम बोल रहा है काशी' बनाई जिसमें रविकिशन और निरहुआ थे। 2018 – 19 की सुपर हिट फिल्मों में पवन सिंह की वांटेड और मां तुझे सलाम , खेसारी लाल यादव की मेहंदी लगा के रखना, दुल्हिन गंगा पार के, डमरू, दीवानापन और संघर्ष , मोनालिसा और विक्रांत सिंह की नथुनिया पे गोली मारे आदि फिल्मों का नाम लिया जा सकता है।

कोविड के बाद का सिनेमा

जब कोविड ने 2020 में पूरे विश्व को अपनी जद में लिया तब तक भोजपुरी सिनेमा का सिनेमाघरों से नाता पहले ही टूट चुका था। भोजपुरी के कई सैटेलाइट चैनल खुल गए थे और ज्यादातर फिल्में वहीं प्रदर्शित होने लगी थीं अथवा यूट्यूब तो भोजपुरी फिल्मों का सबसे पसंदीदा प्लेटफॉर्म शुरू से ही रहा है। जब लॉकडाउन में ढील मिली तो रुकी हुई फिल्में रिलीज हुईं और बाकी फिल्में पूरी हुईं। इस दरम्यान खेसारी लाल की मेहंदी लगा के रखना 3, कूली न. 1 और पवन सिंह की क्रेक फाइटर ही है जो सिनेमाघर में चल पाई। फिर से लंदन जाकर फिल्में शूट करने का सिलसिला चल निकला था इसलिए खेसारी लाल, पवन और निरहुआ की कई फिल्में वहाँ शूट हुईं और 2021 के अंत से लेके 2022 में रिलीज हुईं। हालांकि भोजपुरी फिल्में मल्टीप्लेक्स में तो लगती नहीं और गिनती के कुछ सिंगल स्क्रीन बचे हैं, इसलिए इन फिल्मों ने कुछ खास व्यवसाय नहीं किया। हाँ अब फिल्में टीवी सीरियल के जैसे टीआरपी आने पर सफल मानी जा रही हैं अथवा यूट्यूब पर कितने व्यूज मिले हैं, इस आधार पर। इन दिनों भोजपुरी फिल्मों के जाने माने विलेन अवधेश मिश्रा ने लेखन और निर्देशन शुरू किया है, इसलिए वह अच्छी फिल्में बना रहे हैं। हाँ टीवी चौनल के दर्शक ज्यादातर परिवार के लोग होते हैं इसलिए अब अधिकांश फिल्में उनको ध्यान में रख कर बनाई जाने लगी हैं। बिहार सरकार हमेशा की तरह अभी भी उदासीन है और फिल्में अधिकांशतः यूपी के जिलों में शूट होती हैं क्योंकि योगी सरकार में शूटिंग को लेकर सुविधाएँ हैं। भोजपुरी का भविष्य क्या है, यह स्वयं फिल्म स्टार और निर्माता भी नहीं जानते। ❐

वेजिटेरियन होते हुए नॉनवेज खाना महँगा पड़ गया

–रितु रीना
शिक्षिका डी.ए.वी.पब्लिक स्कूल, बी.एस.ई.बी.

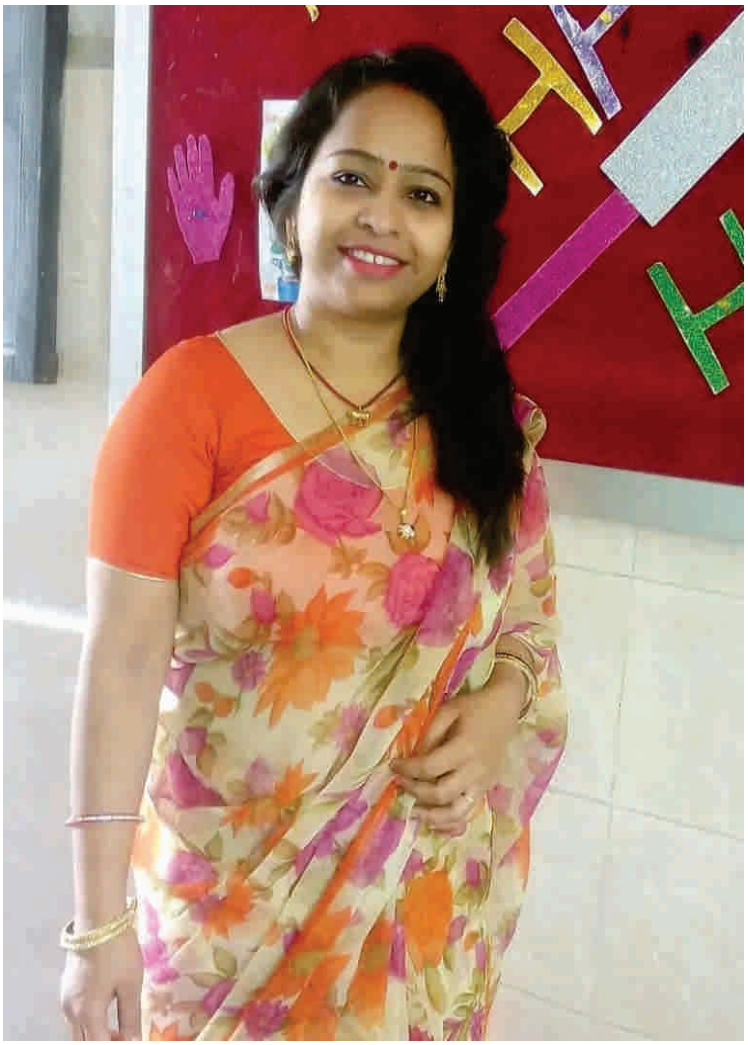

मेरा मायका पटना के अनीसाबाद में है और ससुराल कृष्णा नगर में। मेरी शादी हुई 2007 में। शादी के पहले मैं प्योर वेजिटेरियन थी और यह बात ससुरालवालों को पता नहीं थी। लेकिन मन में यही सोचती थी कि अब तो कैसे भी वहां मुझे एडजस्ट करते हुए नॉनवेज की आदत डालनी पड़ेगी। जब ससुराल आयी तो एक दिन पति घर में मटन लेकर आ गए। मुझे बनाने तो आता नहीं था लेकिन मैंने किसी तरह बना ही लिया। सौभाग्य से मटन अच्छा बन गया था। मैं जब खाने बैठी तो बिना चबाये ही मटन धीरे धीरे निगल गयी। मेरा पेट एकदम भरा भरा सा लग रहा था। रात में जब डाइजेस्ट नहीं हुआ तो पूरा बोमेटिंग हो गया। बेसिन भर गया था और मेरी तबियत भी थोड़ी खराब हो गयी। तब मेरी सासु माँ ने मेरी बहुत हेल्प की और मेरे पति सोये ही रह गए उन्हें कुछ पता ही नहीं चला। फिर जब अगले दिन वहाँ सबको पता चला कि मैं नॉनवेज नहीं खाती हूँ तो मुझसे कहा गया कि, 'जब ऐसा है तो कोई जबरदस्ती थोड़े है, आईंदा से तुम नॉनवेज नहीं खाना।' लेकिन फिर धीरे धीरे मैंने खुद ही आदत डाल लिया और थोड़ा थोड़ा करके खाने लगी। अब तो इतना पसंद आता है कि बिना नॉनवेज खाये हम से रहा नहीं जाता और खुद ही पति से कहते हैं कि 'आज नॉनवेज ले आइए, खाने का मन कर रहा है।'

उन्ही शुरूआती दिनों का एक और वाक्या याद है जब हम गाजर का हलवा बना रहे थें। तब नए नए हम रसोई में डब्बा भी नहीं पहचानते थें कि किसमे चीनी है और किसमे चावल। चूल्हे पर गाजर का हलवा चढ़ा था, उसमे दूध भी डाल दिए। जब चीनी डालने का समय आया तो एक डब्बे से चीनी समझकर डाल दिए और इंतजार करने लगे कि अब हलवा बनेगा। कुछ देर बाद मैंने देखा कि बर्तन में चावल जैसा पकने लगा। जब हम वो डब्बा चेक किये तो मालूम चला कि गलती से हम चीनी की जगह खीर के लिए रखा छोटा बासमती चावल डाल दिए हैं। फिर मैंने उसमे और दूध–चीनी डालकर फिर से पकाया और आखिर में गाजर का हलवा बन ही गया। जब मैंने हलवा घरवालों को परोसा तो किसी ने बुराई नहीं की और सब आराम से खा लिए।

शुरू शुरू में मेरे पति की पोस्टिंग मुजफरपुर में थी। मुझे भी मन था कि उनके साथ वहाँ जाऊँ मगर वो कभी ले नहीं जाते थें। इसी बात को लेकर तब हम दोनों में बहुत झगड़ा होता था। एक दिन मैंने गुस्से में आलमीरा का पूरा कपड़ा निकालकर फेंक दिया था। फिर पति मनाने आये और जब मुझे ले जाने को राजी हुए तब जाकर मेरा गुस्सा शांत हुआ। मैं उनके साथ मुजफ्फरपुर गयी और उनके साथ वहाँ एक महीना रही भी, फिर उनका यहीं पटना में ट्रांसफर हो गया।

❐

लखनऊ में 'रजाकार साइलेंट जेनोसाइड ऑफ हैदराबाद' की स्टार कास्ट ने फिल्म का किया प्रचार

उत्तर प्रदेश ब्यूरो, 26 अप्रैल को रिलीज होने के बाद से ही हैदराबाद राज्य में भारत की आजादी के शुरुआती दिनों में रजाकारों द्वारा किए गए नरसंहार पर आधारित फिल्म 'रजाकारः साइलेंट जेनोसाइड ऑफ हैदराबाद' को पूरे भारत में खूब सराहा गया है।

मुख्य अभिनेता राज अर्जुन और अभिनेत्री अनुसूया त्रिपाठी, निर्माता गुडुर नारायण रेड्डी के साथ लखनऊ में फिल्म की विशेष स्क्रीनिंग में शामिल हुए और मीडिया से बातचीत की। आलोचकों और दर्शकों ने फिल्म की सराहना की है।

फिल्म में अहम भूमिका निभाने वाले राज अर्जुन ने फिल्म के निर्माण के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि रजाकर हर भारतीय को जरूर देखनी चाहिए। यह निजाम के शासन में स्थानीय लोगों द्वारा झेली जा रही त्रासदियों पर प्रकाश डालती है। अभिनेता ने कहा, 'यह फिल्म भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल को एक महान श्रद्धांजलि है।' गुजरात में जन्मे सरदार पटेल भारत के पहले उप प्रधानमंत्री और गृह मंत्री थे। उन्होंने ब्रिटिश शासन के दौरान कई बड़े आंदोलनों का नेतृत्व किया और आजादी के बाद कई रियासतों को भारत में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हैदराबाद के भारत में एकीकरण में उनका अमूल्य योगदान कुछ ऐसा है जिसे कोई भी भारतीय नहीं भूल सकता। निर्माता गुडूर नारायण रेड्डी ने कहा कि फिल्म इतिहास के एक महत्वपूर्ण अध्याय को बयां करती है, जिसे पिछले 75 वर्षों से नजरअंदाज किया गया है। रजाकर अब दक्षिण भारतीय भाषाओं के साथ–साथ हिंदी में भी रिलीज हो गई है, जिससे देश का हर व्यक्ति हैदराबाद के इतिहास के काले अध्याय के बारे में जान सकता है। उन्होंने बताया, 'लखनऊ में विशेष स्क्रीनिंग के माध्यम से हमारा उद्देश्य रजाकारों द्वारा किए जा रहे अत्याचारों को उजागर करना है, जिसकी तुलना हिटलर के अत्याचारों से की जा सकती है।' ट्रेलर में महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के खिलाफ अत्याचारों

को दर्शाया गया है। ओमकारा और भगवा रंग के जाप पर प्रतिबंध लगाने के निजाम के आदेश ने हैदराबाद राज्य के हिंदुओं के खून को कैसे उबाल दिया, इसे फिल्म में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। जैसा कि ट्रेलर में दिखाया गया है, सरदार पटेल का संदेश निजाम को चेतावनी देता है कि हैदराबाद को भारत के साथ एकीकृत होना चाहिए या फिर परिणाम भुगतने होंगे, दर्शकों को पसंद आएगा। यह भी दर्शाता है कि क्रूरता और नरसंहार के बीच, स्वतंत्रता के वीर योद्धाओं ने दृढ़ संकल्प के साथ लड़ाई लड़ी। भारतीय सेना और स्वतंत्रता सेनानी रजाकारों के खिलाफ खूनी लड़ाई शुरू करने के लिए एकजुट होते हैं। सरदार पटेल का संवाद, 'ना संधि ना आत्मसमर्पण अब बस युद्ध होगा' दर्शकों में जोश भर देता है। समरवीर क्रिएशन्स के बैनर तले निर्मित, 'रजाकारः हैदराबाद का खामोश नरसंहार' देश भर के सिनेमाघरों में दिल जीत रहा है।

❐

मध्य प्रदेश के रीवा में बनी हिन्दी फिल्म 'धर्म योद्धा' रिलीज के लिए तैयार

मध्य प्रदेश ब्यूरो, मध्य प्रदेश के रीवा में बनी एक हिंदी फिल्म 'धर्मयोद्धा' अब रिलीज के लिए तैयार है। इस फिल्म के निर्माता विजय कुमार मिश्रा और सूरज नारायण ने क्षेत्रीय प्रतिभावान लोगों को फिल्म में काम करने का मौका दिया है, और सभी ने काबिले तारीफ काम किया है जो फिल्म के ट्रेलर में झलकता है।

धर्म योद्धा फिल्म आधारित है 1300 इसवी में, जब अलाउद्दीन खिलजी व उसके बेटे, हिंदुओं को और उनके मंदिरों को तोड़ रहे थे, एक ऐसा भी समय आया था जब उस दौरन कुछ जगहों में हिंदू खत्म होने के कगार पर आ गए थे। तो फिर वो कौन लोग थे जिन्होंने हिंदू धर्म को बचाया था, अलाउद्दीन खिलजी और उनके वंश का विनाश किया। आपको पता है कि ये काम एक 18 साल की लड़की ने किया था जिसका नाम देवल देवी था।

यह फिल्म मध्य प्रदेश के विंध्य क्षेत्र में शूट की गई है और निर्माता इसे देश में 1000 स्क्रीन पर रिलीज करने की तैयारी कर रहे हैं।

नताशा सूरी अपनी आने वाली फिल्म 'टिप्सी' की रिलीज को लेकर बेहद हैं उत्साहित

मुंबई ब्यूरो, नताशा सूरी एक बहु – प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हैं जो सभी एक में समाहित हैं। पूर्व मिस इंडिया, सुपरमॉडल और टीवी होस्ट से लेकर अब अंततः भारतीय मनोरंजन उद्योग में एक मुख्यधारा की अभिनेत्री बनने तक, वह वास्तव में अपने करियर में एक लंबा सफर तय कर चुकी हैं। उनके असीमित उत्साह, धैर्य, जुनून और कभी हार न मानने की क्षमता के कारण, वह पेशेवर रूप से कुछ बड़ा करने में कामयाब रहीं और उनके वफादार प्रशंसकों की संख्या उस प्यार के बारे में बताती है जो उन्होंने एक कलाकार के रूप में अपने लिए अर्जित किया है। बिपाशा बसु और करण सिंह ग्रोवर के साथ अपनी आखिरी फिल्म 'डेंजरस' में नताशा ने अपने अभिनय से खूब वाहवाही बटोरी।अभिनेत्री अब बहुत उत्साहित हैं और अपनी अगली आगामी फिल्म 'टिप्सी' की रिलीज का इंतजार कर रही हैं, जो दीपक तिजोरी द्वारा निर्देशित और राजू चड्ढा द्वारा निर्मित है। फिल्म 10 मई 2024 को रिलीज होने वाली है और हमें नताशा के साथ बातचीत करने का मौका मिला और उनके बारे में और जानने का मौका मिला कि वह इस समय कैसा महसूस कर रही हैं। पूछताछ करने पर, नताशा ने कहा, 'ठीक है, यह वास्तव में इसका हिस्सा बनने के लिए एक शानदार परियोजना है। फिल्म की पटकथा शानदार है और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसमें थ्रिलर, रहस्य, रोमांच और कॉमेडी के दिलचस्प तत्व हैं। पांच लड़कियों का एक समूह।' गोवा की एक यादगार स्नातक यात्रा पर जा रहा हूँ जहाँ उनके लिए चीजें बहुत गलत हो

जाती हैं, मैं बस इतना कह सकता हूँ कि यह फिल्म मुझे उस तरह से दिखाएगी जो दर्शकों को अभिनेताओं को पसंद आएगी, इस परियोजना के लिए निर्देशक और निर्माता एक दिलचस्प दृष्टिकोण रखते हैं महिला सौहार्द पर और मुझे उम्मीद है कि रिलीज होने के बाद यह चमकेगी और खूब धूम मचाएगी, खासकर युवाओं के बीच, 10 मई को आप सभी को सिनेमाघरों में देखने के लिए उत्सुक हूं, मैं अब और इंतजार नहीं कर सकती। खैर, मुख्य अभिनेत्री के रूप में व्यावसायिक मुख्यधारा की हिंदी फिल्म बनाने के लिए नताशा सूरी को बधाई, जो सभी का मनोरंजन करने और रोमांचित करने के लिए तैयार है। मैं कामना और उम्मीद कर रही हूं कि उसकी ओर से सब कुछ ठीक हो जाए। काम के मोर्चे पर, नताशा सूरी के पास कई अन्य दिलचस्प परियोजनाएँ हैं, जिनकी घोषणा समय पर की जाएगी। हम नताशा को शुभकामनाएं देते हैं। ❐

कहानी

शादी डॉट कॉम

✍ सतीश 'बब्बा'
कोबरा, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

मेरे मोबाइल फोन की घंटी बजने लगी मैंने देखा भाई सूरज दीन का फोन था। मैंने बिना किसी देरी के फोन उठा लिया। सूरज दीन भाई हमारे पैतृक गांव में ही रहते थे आज भी! और वो हमारे परिवार से ही थे। हमारे कई परदादाओं में से एक जिनकी औलाद हम हैं आकर वर्तमान गांव नागिन पुरा में आकर बस गए थे।

अब चाहे जहां रहो, पीपल का पत्ता पीपल ही तो कहाएगा, सूरज दीन भी तो अपने ही हुए। सूरज दीन से औपचारिक पैलगीध प्रणाम के पश्चात अब आगे की बातें हुई। दरअसल बेटियों की कमी के कारण पुरुषवर्ग में रडुओं की बाढ़ सी आ गई है। हड़बड़ाहट में तो अब यह नौबत है कि, 'काली दे या गोरी दे, लंगड़ी, लूली या कानी दे पर हमें घरवाली दे!'

एक अंधरे में कनवां राजा अर्थात पुरुष वर्ग को शादी डॉट कॉम अंधेरे में दूर एक छोटी सी ज्योति की तरह टिमटिमाती नजर आई। इसी में हमारे सूरज दीन भाई के नजदीकी, हमारे भी वह नजदीकी ही हुए। उन्होंने भी पन्द्रह सौ रुपैया देकर रजिस्ट्रेशन कराया था।

शादी डाट काम के अपने ही वसूल होते हैं, उनके अपने नियम – कायदे भी होते हैं। और इसी क्रम में उनसे जिनका नाम ज्ञानी प्रसाद था 1500 रुपए रजिस्ट्रेशन फीस के अलावा लड़की से बात कराने का 500 रुपए जमा कराए और फिर लड़की की मां से बात कराने का 500 रुपए और जमा कराए। आजकल फोन पे और गूगल पे अच्छा साधन है। लेकिन लड़की की मां ने कहा कि, 'हमने भी 1500 जमा किए हैं!'

अब ज्ञानी प्रसाद को अच्छा लगा, हौसला बढ़ा तो वह ज्ञान फैलाया, लड़की के नाम और पता तथा फोन नंबर की मांग करने लगा। तब फिर 500 रुपए में पता उल्लास नगर मोहल्ले का दिया और शादी डॉट कॉम ने बताया कि, 'लड़की के पिता नहीं हैं और लड़की का नाम शानू शर्मा है, और लड़की की पढ़ाई एम काम तक है और वह प्राइवेट स्कूल में मास्टरनी है। अपनी मां के साथ रहती है!'

इसी का पता करने के लिए सूरज दीन भाई ने मुझे मेरे वाट्सएप पर उसका पता जो शादी डॉट कॉम ने दिया था मुझे दे दिया था। क्योंकि उल्लास नगर में मेरा आना जाना बना रहता था।

सूरज दीन भाई पर हमने एहसान जताया और अंदर ही अंदर खुश भी हुआ। चलो पता करते हैं फिर हम भी अपनी और अपने दोस्तों की गोट बैठाते हैं शादी डॉट कॉम पर रजिस्ट्रेशन कराने के बाद।

अभी ज्ञानी प्रसाद को 1000 रूपए और लगना है, कोई बात नहीं 3500 की तो बात है। गृहस्थी तो बन जाएगी।

आखिर हम दूसरे ही दिन उल्लास नगर पहुंच गए और घर – घर जानकारी जुटाने लगे दिक्कत भी सहे और प्राइवेट स्कूलों में भी जानकारी लिया। लेकिन वही 'ढाक के तीन पात' यानी, 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया!' परिणाम निल बटे निल। कोई भी परिवार और लड़की वो नहीं थी और फोटो भी किसी से नहीं मिली।

उल्लास नगर के एक सज्जन ने बताया कि, 'ऐसे कितने शादी डॉट कॉम हैं जो, चार से छह लड़कियां बैठाए रखते हैं और एक कम्प्यूटर भी रखते हैं और फिर उन लड़कियों को ही किसी को मां और किसी को लड़की बनाकर बात करवाते रहते हैं। पैसा अब और नहीं निकल पाएगा जानकर फिर ब्लाक कर देते हैं!'

मुझे शक पहले से ही था और सब सुनकर मेरा माथा ठनका। मैंने सूरज दीन को फोन किया और उसे बताया कि, 'जो फोटो और पता आपने भेजा है वह किसी भी यहां की लड़की से नहीं मिल रही है। सब कुछ गलत है ऐसा लगता है!'

सूरज दीन ने कहा, 'अभी मुझसे कल ही तो बात हुई है!'

मैंने कहा, 'अब फिर से बात कीजिए!' उधर से काल काट दी गई।

कुछ देर बाद सूरज दीन का फोन आया और उसने बताया कि, ष्ठीक कहते हैं आप! अब उनका फोन कह रहा है कि, 'यह नंबर उपयोग में नहीं है!'

इधर मैं भी सकते में था और वह लड़का ज्ञानी प्रसाद हजारों रुपए गंवाकर अब भी कुंवारा है। यहां ज्ञानी प्रसाद, अज्ञानी का काम कर गए थे। मुझे इन शादी के दीवानों पर हंसी आ रही थी और गुस्सा भी आ रहा था और तरस भी!

आखिर शादी डॉट कॉम की जरूरत ही क्या है? अपना कैरियर बनाइए और अपने लोगों से मिलकर, कन्या खोजकर अपने अनुरूप शादी किसी गरीब की बेटी, अनाथ कन्या से शादी कर लेंगे तो हर्जा ही क्या होगा?

मैं उल्लास नगर से अपना सा मुंह लेकर वापस लौट पड़ा और मुझे कुछ सामाजिक परिवर्तन की भी जरूरत महसूस हो रही थी। समयानुकूल परिवर्तन की आहट भी महसूस हो रही थी। ❐

कविता

बिखरे ना परिवार हमारा

भैया न्याय की बातें कर लो,
सार्थक पहल इक रख लो।
एक मां की हम दो औलादें,
निज अनुज पे रहम कर दो।।

हो रहा परिवार की किरकिरी,
गली, नुक्कड़ और बाजारों में।
न्यायपूर्ण आपसी संवाद छोड़,
अर्जी दिए कोर्ट कचहरी थानों में।।

लिप्सा रहित हो सभा हमारी,
निष्पक्ष पूर्ण हो संवाद हमारा।
मैं कहूं तुम सुनो तुम कहो मैं,
ताकि खत्म हो विवाद हमारा ।।

कर किनारा धन दौलत को,
भाई बन कुछ पल बात करों।
मां जैसे देती रोटी दो भागों में,
मिलकर उस पल को याद करों।।
बिन मां बाप का अनुज तुम्हारा,
मां बाप बनके आज न्याय करों।।

हर लबों पे अपनी कानाफूसी,
बैरी कर रहे अपनी जासूसी।

भैया, गर्भ एक लहू एक हमारा,
कंधों पे झूलने वाला मैं दुलारा।
आओ मिलकर रोके दूरियां,
ताकि बिखरे ना परिवार हमारा।।
ताकि बिखरे ना..... ।।

कविता

हे मतदाता ! हे राष्ट्र निर्माता !

हे मतदाता !, हे राष्ट्र निर्माता !
दारू मुर्गे पर ना बिक जाना।
प्रत्याशी को समझ परख कर,
मतदान जरूर तुम कर आना।।

लोकतंत्र के तुम हो आधार,
वोट तुम्हारे विकास सूत्रधार।
जाति धर्म से ऊपर उठ कर ,
मतदान जरूर तुम कर आना।।

हे भाग्य विधाता !, हे मतदाता !
अबकी फिर चूक ना जाना।
लोभ भय में ना फंस तुम,
ईमानदार प्रत्याशी चुन लाना।।

हे मतदाता तुम भी,
अपनी ताकत को पहचानो।
नेता तुम्हारा पढ़ा लिखा हो,
अबकी ऐसा तुम चुन डालो।।

हे मतदाता !, हे राष्ट्र निर्माता !
तुम्हारा मत है बड़ा अनमोल।
दारू, मुर्गे के लालच में,
अबकी ना दो इसे फिर तोल।।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक
जौनपुर, उ. प्र. –222129

जीवन जीने की कला

✍ डॉ. कुमकुम वेदसेन
मनोविश्लेषक, नवी मुंबई

ईश्वर द्वारा जो इंसान को जीवन मिला है वह अनमोल है। ईश्वर ने हमें जीवन दिया, अपनी कलाओं से उसे निखारना है, संवारना है और सुंदर बनाना है और यह इंसान के हाथ में है। जिसने जीवन जीने की कला को अपना लिया उसका जीवन फूलों के गुलदस्ते की तरह खिलता और सुगंधित रहता है पर जिसने इस कला से अपने आप को दूर रखा वह हर वक्त कठिनाइयों , परेशानियों और समस्याओं में ही उलझा रह जाता है। उसे अपना ही जीवन एक बोझ सा महसूस होने लगता है।

जीवन जीने की क्या–क्या कला हो सकती है इस पर हम विचार करते हैं।

जीवन का मुख्य लक्ष्य हैप्पीनेस है, इस हैप्पीनेस या खुशियों की तलाश में हम प्रतिदिन एक नया प्रयोग करते रहते हैं, नई तलाश जारी रहती है।

हैप्पीनेस बाजार से खरीदने वाली कोई वस्तु नहीं है, यह तो इंसान के मानसिक स्थिति पर निर्भर करती है।

जीवन की तीन ऐसी आवश्यकता है जो इंसान को हमेशा व्यस्त रखती है–

1. work
2. Food
3. Health

इन्हीं तीनों के जाल में उलझते और सुलझते वक्त ही हमें खुशियां मिलती हैं, शांति मिलती है, आत्म संतोष मिलता है और विश्वास पैदा होता है। स्वस्थ भी रहते हैं, खुश भी रहते हैं। इन तीन तत्वों का प्रबंधन अगर सही ढंग से अपनी हैसियत, काबिलियत के आधार पर किया जाए तो दिल और दिमाग में एक आत्म संतोष की भावना आती है और वहां से खुशी का जन्म होता है।

विचार और व्यवहार ही मनुष्य को उठाते हैं और मनुष्य को गिराते हैं। मानव जीवन का आधार विचार है, विचार एक संसाधन है। विचार हमारे व्यक्तित्व और चरित्र की रचना एवं निर्माण करते हैं।

सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही विचारों में एक शक्ति होती है। जीवन में प्राय नकारात्मक विचार ही सबसे पहले आते हैं, यही कारण है कि इसे हैंडसम डेविल कहा गया है।

विचारों का निवास चेतन मस्तिष्क और संस्कारों का आवास अवचेतन मस्तिष्क में होता है। विचार जब आचरण में उतरते हैं तो वह काम बन जाते हैं। मनुष्य के विचार ही क्रिया में परिणत हो जाते हैं जो प्रौढ़ होकर संस्कार बन जाते हैं। संकल्प पूर्ण विचार दिशा प्रदान करते हैं और यही आशीर्वाद और वरदान बनकर जीवन में एक बदलाव लाते हैं। यही कारण है कर्म के माध्यम से आशीर्वाद और अभिशाप दोनों एक परिणाम के रूप में जीवन में उभरकर आते हैं। 90% लोग काल्पनिक डर में रहा करते हैं।

भय जीवन का बड़ा शत्रु है जो अज्ञानता का सूचक है। अपना दृष्टिकोण बदलकर लज्जा और संकोच को विश्वास तथा श्रद्धा के रूप में बदलना हमारी जिम्मेदारी है। सही संकल्प, सही निर्णय करने में आत्मविश्वास मदद पहुंचाता है। दूसरे क्या सोचते हैं इस पचड़े में ना पड़ें, दूसरे के हाथों का खिलौना बनकर जीवन को नहीं जिए।

किस प्रकार आप अपने विचारों को सकारात्मक बना सकते हैं

विश्वास, आत्मविश्वास, आत्मनिर्णय, संकल्प के माध्यम से अपने जीवन में बदलाव ला सकते हैं। जीवन में जो भी प्रतिकूलता देखने को मिलती है वह एक अभिशाप है इस विषय पर कम ध्यान दें यही आपके लिए एक वरदान बनने वाला है।

आपने क्या खोया है उसे बिल्कुल ना सोचे, क्या छोड़ा है उस पर बिल्कुल ध्यान ना दें। उन गुजर चुकीं परिस्थितियों से आपने क्या सीखा है उसकी समीक्षा करें और अगला कदम संभालकर रखें जो आपको सकारात्मकता की ओर ले जाएगा।

रिश्तों पर कभी भी पर्दा ना डालें और ना दरार पैदा करें, आपकी अपनी पूरी कोशिश होनी चाहिए टूटे हुए दीवार के माध्यम से एक पुल बनाया जाए, जिससे बिखरे रिश्ते फिर से संभल जाएं। यही मानवता है यही जिंदगी है। खुलकर हंसे खुलकर जिएं ,यह जिंदगी मिलेगी ना दोबारा। ❐

आज खेल एक फैशन बन गया है : बद्री प्रसाद यादव

बद्री प्रसाद यादव (अवकाशप्राप्त उद्घोषक, आकाशवाणी, पटना, खेल पत्रकार, पूर्व कप्तान, बिहार फुटबॉल टीम, अन्तर्राष्ट्रीय कमेंटेटर) से वरिष्ठ साहित्यकार और प्रसारक डॉ. किशोर सिन्हा की बातचीत

परिचय

जन्म 15 दिसम्बर, 1940
शिक्षा बी–एस. सी., विज्ञान महाविद्यालय, पटना
संप्रतिः आकाशवाणी, पटना के सेवा–निवृत्त वरीय उद्घोषक
अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय क्रिकेट तथा फुटबॉल खेलों के कॉमेंटेटर.
दूरदर्शन पर विश्व कप फुटबॉल मैचों की एंकरिंग.
बिहार के पूर्व संतोष ट्राफी खिलाड़ी.
बिहार सरकार द्वारा मनोनीत एल. एन. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा और बी. पी. मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा के सीनेटर. बिहार तैराकी संघ के पूर्व उपाध्यक्ष.
1982 के दिल्ली एशियाई खेलों में बतौर एक स्विमिंग अधिकारी सहभागिता.
बिहार स्पोर्ट्स काउंसिल के पूर्व सदस्य.
पटना विश्वविद्यालय 'कलर' एवं विज्ञान महाविद्यालय 'ब्लू' से सम्मानित.
राष्ट्रीय स्पोर्ट्स अकादमी, उत्तर प्रदेश द्वारा वर्ष 1992 93 में श्रीमती चंद्रा त्रिपाठी पुरस्कार से सम्मानित.
आकाशवाणी और दूरदर्शन पटना के परीक्षित नाटक कलाकार.
पटना विश्वविद्यालय द्वारा मंचित नाटक 'पागल' में कलाकार के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका.
आकाशवाणी पटना से खेल कार्यक्रमों और बहुचर्चित पत्रोत्तर कार्यक्रम 'निवेदन है' और दूरदर्शन, पटना से स्पोर्ट्स प्रोग्राम का संचालन.
बिहार फ्लाइंग क्लब पटना के पूर्व प्रशिक्षु.
खेलों में विशिष्ट योगदान के लिए बिहार सरकार से सम्मानित.
ईटीवी बिहार के 'दास्ताने जुर्म' के सैकड़ो एपिसोड में अभिनय.
दैनिक समाचार पत्रों– आर्यावर्त, प्रदीप, पाटलिपुत्र टाइम्स और हिंदुस्तान में खेल पत्रकारिता.
पटना सीनियर डिवीजन फुटबाल लीग में समाहरणालय स्पोर्ट्स क्लब, यूथ एथलेटिक क्लब, बिहार पुलिस, ट्रांसपोर्ट तथा बिहार होमगार्ड क्लब का प्रतिनिधित्व.

प्रश्न– बद्री जी, आप हमारे अभिभावक की तरह हैं। आप अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कमेंटेटर, खेल–समीक्षक, खेल–पत्रकार और खिलाड़ी भी रहे। कहना चाहिए कि कई खेलों में आपकी दक्षता रही। हमारे जैसे लोगों ने तो हमेशा आपसे प्रेरणा ग्रहण किया है। इसलिये हम प्यार से आपको 'बद्री भैया' कहते हैं। मेरा तो जो कुछ भी थोड़ा–बहुत शौक रहा खेलों का, उसके प्रेरणा–स्रोत बद्री भैया ही हैं। तो बद्री भैया, थोड़ा अपने जीवन के बारे में बताइए, कैसे आपका बचपन बीता और कहां बीता?

उत्तर– यह हमारा सौभाग्य है और हम भाग्यशाली हैं। वैसे तो इंसान का एक चेहरा अंदर का होता है और एक बाहर का होता है। लेकिन आप आज तक एक–समान दिखे.... आज भी लग रहे हैं..

.. आप स्वस्थ रहें, निरोग रहें और इसी तरह आपके कर्तव्य की व्याख्या होती रहे। आपका 'भइया' कहना, यह संबोधन हमारे प्रति अपनापन दर्शाता है, जो बहुत कम लोगों में देखने को मिलता है। आपने हमारा परिचय पूछा है तो सबसे पहले बताऊं कि मेरी पैदाइश ननिहाल में हुई। मेरे ननिहाल में एक इलाका है, पश्चिम दरवाजा... वहां एक गली है, घसियारी गली। वहीं मेरी नानी रहा करती थीं। अब वह परलोक सिधार गईं। उसके बाद हम अपनी दादी के घर चले आए। शिक्षा की बात कहें तो प्रारंभिक शिक्षा राममोहन राय सेमीनरी में और उसके बाद बी एन कॉलेज और फिर बी–एस.सी. हमने पटना साइंस कॉलेज से किया। यह हमारा दुर्भाग्य है कि एम–एस.सी. नहीं कर सके जुलॉजी में, क्योंकि हम उस समय नौकरी में आ गए थे और समय का अभाव था।

प्रश्न– संबंधों में कहीं–ना–कहीं एक डोर बंधी होती है। हमारे आपके बीच भी एक डोर है। आपने जो बात कही, उससे बंधी हुई दिखती है और जिसके कारण एक आत्मीय संबंध 40 सालों का और उससे भी ज्यादा का हो गया है। आपने कहा कि आप की पैदाइश घसियारी गली, पश्चिम दरवाजा के घर में हुई तो मैं बताऊं कि उसी घसियारी गली के पास पातो का बाग है दीवान मोहल्ला में, जहां मेरा जन्म हुआ। तो आप की पैदाइश और मेरी पैदाइश का स्थान एक ही है, एक ही मोहल्ला है.... ज्यादा फर्क नहीं है घसियारी गली और थोड़ा–सा आगे पातो का बाग में। दूसरा यह कि आपने भी बी एन कॉलेज में पढ़ाई की है और मैंने भी..... तो ये दो संबंध तो सीधे–सीधे जुड़ गए आपसे। यह बड़ा अच्छा लग रहा है। लेकिन आकाशवाणी की नौकरी में आप कैसे आए.... आकाशवाणी में उद्घोषक कैसे बने, उद्घोषक बनना आपने क्यों पसंद किया या किसी और जॉब में थे पहले....। वैसे मुझे आपके एक राज का पता चला है, बताऊं.... राज ये है कि आप पायलट बनना चाहते थे और इसके लिए आपने कोशिश भी की थी। वो वाकया क्या है?

उत्तर– समय बहुत बलवान है। समय जीवन को बदल देता है, समय कब, किस समय, किस मोड़ पर ले जाएगा और उस मोड़ पर से वह मनुष्य के जीवन को किस तरफ मोड़ देगा, ये कहना बहुत मुश्किल है। आपने जो कहा, सही है। मैं पायलट बनना चाहता था। हमारी ख्वाहिश थी कि हम पायलट बनें। उसके लिए मैंने चेष्टा भी की। 'बिहार फ्लाइंग क्लब' से एक विज्ञप्ति निकली हुई थी स्टूडेंट पायलट के लिए। हमने वहां अप्लाई किया और एग्जामिनेशन में क्वालीफाई भी किया। हम स्टूडेंट पायलट बने। सब कुछ ठीक–ठाक था। लेकिन अचानक ऐसा हुआ कि सोलो फ्लाइंग लेने से एक सप्ताह पहले.... सोलो फ्लाइंग होता है कि अकेले हवाई जहाज चलाने का परमिशन.... वह सबकुछ देख–दाख कर, ठोक–बजाने के बाद ही मिलता है। अचानक जब घर पहुंचे तो बाबू जी ने कहा कि देखो तुम फ्लाइंग छोड़ दो....। मैं हक्का–बक्का रह गया क्योंकि बाबू जी ने ही कहा था कि तुम फ्लाइंग करो..... परमिशन दिया... परमिशन था गार्जियन का.... और आज अचानक उनका ऐसा कहना....! तो हम चुप्पी साध गए। वो इसलिए कि पहले

गार्ज़ियन के सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती थी। आज एक बाप और बेटे का जो फासला है, जो रिश्ता है, वह बहुत नजदीक हो गया है। पहले हमलोगों के समय में ऐसा था कि बाबूजी ऊपर हैं तो हम नीचे.... दोनों अगर नीचे हैं तो एक कमरे में वो तो दूसरे कमरे में हम। ख़ैर... लेकिन मन में एक बात द्वंद्व करती रही कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा। तीन–चार दिन बीत गए.... दो–तीन रातें उथल–पुथल में.... क्या करें.... क्या ना करें की उधेड़बुन में..... क्योंकि जो ख्वाहिश हमारी थी उसको झटका लगा था।

मैंने सोचा कि फ्लाइंग छोड़ देना ही अच्छा है, क्योंकि यह बहुत ही रिस्की जॉब है। अगर थोड़ी–सी गलती हुई तो आप गए.... हमारे इंस्ट्रक्टर.... लोगों का कहना था कि अगर हम आपको ये बताते हैं कि ये 'ए' है तो अगर 'बी' जानते भी हो तो उसको भूल जाओ.... कन्सन्ट्रेट करो 'ए' पर, 'बी' की तरफ बढ़ने की कोशिश भी मत करो। तो जब इस तरह की ट्रेनिंग हो तो मैंने सोचा कि छोड़ ही दूं। आखिर क्या बात है कि बाबू जी ने ऐसा कहा। मैंने फ्लाइंग छोड़ दी, लेकिन मां से पूछता था कि बाबू जी ने ऐसा क्यों कहा कि फ्लाइंग छोड़ दो। पता चला कि जो बाबूजी से सीनियर थे, बुजुर्ग थे, वे लोग बाबूजी को हमेशा हैमरिंग करते थे. उन्हें बार–बार कहते कि अरे तुम्हारा एक बेटा है, वह खत्म हो जाएगा.... भगवान् ना करे कि ऐसा हो.... तुम्हारा वंश कैसे चलेगा..... ये बातें बाबूजी के दिमाग में बैठ गईं। नतीजा ये हुआ कि उन्होंने मना कर दिया। जब आपका वंश ख़त्म हो जाए तो ये झटका है। आजकल कहा ये जाता है कि फलाना डिप्रेशन में चला गया। पहले ये शब्द यदा–कदा ही सुनने को मिलता था। मैंने बर्दाश्त किया और ईश्वर पर छोड़ दिया कि भगवान की जो मर्जी हुई, बाबूजी का जो आदेश हुआ। उसे माना..... और ईश्वर की कृपा से आकाशवाणी में नौकरी मिली।

प्रश्न– अक्सर हम बहुत सारे सपने देखते हैं.... हर अभिभावक और पिता सपना देखता है कि हम ऐसा बनना चाहते थे पर हम ऐसा बने या हम ऐसा बने और वह सपना पूरा नहीं हो पाया.... फिर वह सपना हम अपने बच्चों में देखने की कोशिश करते हैं। आपने कभी सोचा कि हम नहीं पायलट बन पाए तो कोई बात नहीं, हमारे बच्चे बनें या आपने पिताजी के आदेश को ही सर्वोपरि मानकर उसे अपने बच्चों पर भी लागू किया?

उत्तर– हमारी सोच ये रही है कि किसी के ऊपर कुछ थोपना अच्छी बात नहीं है, लेकिन मैंने अपने बच्चों का इन्टेन्शन... देखा कि इसका झुकाव किस तरफ है.... अगर इसका झुकाव होगा कि हम पायलट बनें, पापा बनने वाले थे, नहीं बन पाए, तो सिर्फ एकतरफा बात नहीं होती। आपको दोनों साइड झांकना पड़ेगा। अगर उसकी ख्वाहिश यह होती, उसका झुकाव होता कि हम अपने पापा के अरमानों को पूरा करें तो जरूर करता। मैंने देखा कि उसका झुकाव नहीं है इसलिए उस पर प्रेशर डालना अच्छा नहीं समझा। हमने ये कभी नहीं सोचा कि ये हम नहीं बन सके तो हमारा बेटा बन जाए। उसकी एबिलिटी जिस चीज में है, अगर वह पढ़ाई में है तो ठीक है। अगर वह खेल में है तो तुम खेल में ही अच्छा करो।

प्रश्न– आपने तो सोचा होगा जरूर कि अगर वो चाहता है कि पायलट बने तो आप मना नहीं करते.... आप उसकी इच्छा का सम्मान करते.....

उत्तर– आदमी को किसी एक चीज पर

स्टेबल नहीं करना चाहिए। आपको अपने हाथ में ऑप्शन रखना पड़ेगा.... नहीं तो ये जो परफेक्शन और एजुकेशन नाम की चीज है ना, वह बिल्कुल खत्म हो जाएगी। मैं अपने बारे में बताता हूं.... मैं फुटबॉल खेलता था। वहां पर समय निकाल कर पत्रकारिता भी किया..... उसके बाद आकाशवाणी में नौकरी हुई। हालांकि मैंने नौकरी बिहार पुलिस में भी की, ट्रांसपोर्ट में, होमगार्ड में और अंत में ऑल इंडिया रेडियो हमारे पास ऑप्शन था। अगर ये नहीं तो हम दूसरा काम कर सकते हैं।

प्रश्न– आपने तो बहुत अच्छी बात कही और ये आज की पीढ़ी के लिए बहुत ही प्रेरणादायी बात है कि हम एक ऑप्शन को नहीं पकड़ के रखें, बल्कि जीवन में हमारे पास बहुत सारे ऑप्शन होते हैं। बहुत सारे क्षेत्र होते हैं.... हमें सब में थोड़ा–थोड़ा ज्ञान तो रखना चाहिए। अगर एक रास्ता बंद हो गया तो दूसरे रास्ते खुले हों आपके लिए। बद्री भइया, आप इंटरनेशनल लेबल के कमेंटेटर रहे और लगभग आपने हर खेल की कमेंट्री

की है..... फुटबॉल की, बैडमिंटन की, वॉलीबॉल की, क्रिकेट की, कबड्डी की..... राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय कई खेलों की.... मुझे याद है, जब टेलीविजन का जमाना नहीं था... शुरू में तो रेडियो की कमेंट्री ही होती थी और रेडियो की कमेंट्री सुनकर ही हम लोगों को जो आनंद आता था, अब शायद टीवी देखने में इतना आनंद नहीं आता..... जितना रोमांच उस आंखों देखा हाल में आता था जैसे कि हम बिल्कुल खेल को सामने से देख रहे हैं और उस जमाने में बड़े–बड़े कमेंटेटर भी थे– जसदेव सिंह, माल्विन डिमेलो, जोगाराव और सुशील दोषी.... और भी बहुत सारे..... हम इस पर बात करना चाहते हैं..... ये जो रोमांच है कमेंट्री का, जो उस जमाने में था.... रेडियो से अब भी कमेंट्री होती है, लेकिन कितना फर्क आया है?

उत्तर– जैसे रेडियो है..... अब जो ब्रॉडकास्ट कर रहा है, वो दिख नहीं रहा है, आवाज से संबंध है उस व्यक्ति का....। संबंध सिर्फ आवाज से है तो आवाज में मिठास होनी चाहिए। अब बहुत कम लोगों में वह मिठास पाई जाती है। अब जैसे जसदेव सिंह को देख लीजिए, क्या आवाज थी उनकी, खनक थी....। स्कंद गुप्त, जितने भी लोग थे सभी की आवाज बहुत अच्छी थी। उसके अलावा अब साहित्य की बात होती है.....। अब अधिकतर लोग पढ़–लिख गए हैं.....। पहले शिक्षा होती नहीं थी....। अब पढ़े–लिखे लोग अधिक हो गए हैं....। अब बोलते हैं कि 'बॉलिंग करी'.. तो 'बॉलिंग करी' क्या होता है....। तो उसमें भी आज परिवर्तन हो गया है....। क्योंकि एक खिलाड़ी जो है वह पढ़ा–लिखा, पी–एच.डी. नहीं होता है...। इंजीनियर होते हैं, डॉक्टर होते हैं, जो पढ़ाई के साथ–साथ खेल को भी लेकर चलते हैं। लेकिन इंटरनेशनल खिलाड़ी के लिए पढ़ाई को भी साथ रखना बहुत मुश्किल है.....।

प्रश्न– मुझे एक वाक्या याद आता है.... मैं आपसे शेयर करना चाहूंगा। जसदेव सिंह ने, उनकी एक किताब है, उसमें उन्होंने जिक्र किया है। एक मैच में माल्विन डिमेलो के साथ उन्हें कमेंट्री करनी थी। कोई इंटरनेशनल मैच था, टोकियो ओलिंपिक था शायद...। तो वो सफर कर रहे थे हवाई जहाज से। माल्विन डिमेलो एक–दो बार उनके साथ कमेंट्री में थे, तो हल्की–फुल्की बात होती थी उनसे। हालांकि मालवीन डिमेलो उनसे काफी बड़े थे, लगभग दस–बारह साल.....। तो रास्ते–भर माल्विन डिमेलो ने उनसे कोई बातचीत नहीं की..... जसदेव सिंह को बड़ा ख़राब लगा कि आप उपेक्षा इस तरह से क्यों कर रहे हैं। उसके बाद जब बैठे वहां कमेंट्री करने, कमेंट्री बूथ में तो उन्होंने कहा कि आज देखता हूं कि मेरी जो फ्लुएंट इंग्लिश है, मेरी इंग्लिश की जो स्पीड है, उस स्पीड का मुकाबला एक हिंदी का कमेंटेटर कैसे कर सकता है। उसके बाद उन्होंने कहा ओवर टू जसदेव सिंह और जसदेव सिंह ने जब बोलना शुरू किया तो बोलते–बोलते उन्होंने पीठ पर हाथ का स्पर्श महसूस किया माल्विन डिमेलो का और उस स्पर्श से यह पता लग रहा था कि वह प्रसन्न हैं कि कोई हिंदी का व्यक्ति 250 शब्द प्रति मिनट के हिसाब से कोई कॉमेंट्री इतनी शुद्ध भाषा में और उच्चारण में कर सकता है, यह उन्हें नहीं पता था। ऐसे तो कई प्रसंग हैं कमेंट्री के जीवन में, आपके जीवन में कई प्रसंग ऐसे होंगे जब कमेंट्री करते हुए कई लोगों का साथ रहा आपका...। प्रेम कुमार और समीर सेनगुप्ता... तो अपने यहां के थे, उनका–आपका साथ काफी रहा....। ऐसे बहुत सारे प्रसंग होते हैं जो कमेंट्री बूथ में घटित होते हैं. कुछ ऐसे प्रसंग बताइए...

उत्तर– आपने माल्विन डिमेलो का नाम लिया, जसदेव सिंह का नाम लिया... तो अब हिंदी और इंग्लिश में उन जैसे ब्रॉडकास्टर का मिलना बहुत ही मुश्किल है। अगर हिंदी कमेंट्री के जन्मदाता की बात पूछें तो जसदेव सिंह का नाम आएगा. क्या उनकी आवाज, क्या विवरण प्रस्तुत करना... उनका मुकाबला करना बहुत मुश्किल है। उसी तरह से जब इडेन गार्डेन पर मैं कमेंट्री करने गया था पहली बार, वो नेहरू इंटरनेशनल एजुकेशन फुटबॉल टूर्नामेंट था. अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट... मैच का उद्घाटन करने उस समय इंदिरा गांधी आई थीं। हमने देखा, एक दो स्पेल... पहले स्पेल की इंग्लिश की कमेंट्री खत्म हुई। अब इंग्लिश वाले कॉमेंटेटर हमको देख रहे थे कि यह हमारी जैसी स्पीड में बोल सकता है कि नहीं बोल सकता है.... क्योंकि वे बंगाली थे, तो उनके जेहन में यह बात भी होगी कि बांगला की जो कमेंट्री होती है, वह हिंदी से ज्यादा स्पीड में होती है... वह तुलना कर रहे थे हिंदी कमेंट्री की बांगला कमेंट्री से...। उन्होंने देखा कि यह तो बोलता ही चला जा रहा है, तो डॉ. प्रेम कुमार, जो बड़े भाई की तरह थे– उनकी वजह से ही हमने कमेंट्री शुरू की थी...। वही हमको पकड़ के ले गए थे और उन्होंने हमको समझाया था कि "...बद्री देखो, तुम अनाउंसर हो... बहुत इत्मीनान से अनाउंसर–उद्घोषक बोलता है कि यह आकाशवाणी है...। अब थोड़ी देर में आप विविध समाचार सुनेंगे... लेकिन अब तुम्हारा चेहरा हो गया है कमेंटेटर का... इसमें तुमको एक मिनट में कम से कम दो सौ शब्द या उससे भी ज्यादा शब्द बोलने होंगे... इस बात का भी तुम्हें ख्याल रखना पड़ेगा कि ओवरलैपिंग

नहीं हो, शब्दों का उच्चारण बिल्कुल साफ हो, सही हो, जो वातावरण है उसका विवरण... जो खेल का मैदान है उसकी हिस्ट्री अगर मालूम है तो, अगर जानते हो तो, देना होगा... बहुत से लोग समझते हैं कि कमेंट्री बहुत आसान है... जिसके मन आए, कोई भी कर सकता है कमेंट्री। लेकिन ऐसा है नहीं। अगर आप अपनी पहचान छोड़ना चाहते हैं तो आपको खेल के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए, आपको स्टडी करना पड़ेगा। कमेंट्री बिना स्टडी के नहीं होगी. ..।''

लेकिन हमारे यहां क्या होता है, दो दिन पहले इन्फॉर्मेशन आया... रिपोर्टर... आदमी... दिल्ली चला जाता है, बैंगलोर चला जाता है, मुंबई चला जाता है। परंतु कमेंटेटर को काम करने का मौका नहीं मिलता है। लेकिन जो असल होते हैं ना– जैसे माल्विन डिमेलो का नाम लिया आपने कि जसदेव सिंह से पूरी जर्नी बातें नहीं कीं... वह कन्सन्ट्रेट कर रहे होंगे। वह तो देखना चाह रहे थे और उन्होंने देखा कि हिंदी में भी इतनी तेजी से बोला जा सकता है कि नहीं....। या यह भी होगा कि वह आने वाली कमेंट्री के बारे में अपना होमवर्क तैयार कर रहे हों, बिना होमवर्क के आज की डेट में आप कुछ नहीं कर सकते। वहां पर जसदेव सिंह का भी नाम था, माल्विन डिमेलो वह भी मशहूर थे, वहां कम्पटीशन था। जहां तक हम सोचते हैं, यही बात रही होगी। तो प्रतिद्वंद्विता थी वहां, हेल्दी कम्पटीशन थाय वह जो बैठ करके, चुपचाप हो, ग्राउंड का खाका खींच रहे होंगे ग्राउंड का, जो खेलनेवाले हैं, उनके बारे में तस्वीर तैयार कर रहे होंगे और उसके बाद जब पहुंचे तो देखा कि जसदेव भी हैं, हमारी बराबरी में चल रहे हैं...।

प्रश्न– बहुत–सी ऐसी घटनायें हैं, जिनका वर्णन किया गया है। आपके साथ कुछ ऐसे रोचक प्रसंग हैं, जो आपको याद आ रहे हों...?

उत्तर– हम बताते हैं। एक लोकल वाकया... फुलवारी शरीफ के मिथिलेश स्टेडियम में फुटबॉल मैच की कमेंट्री चल रही थी। हम वहीं कमेंटेटर थे। इंटरवल होने को था। जिनका स्पीच चल रहा था वह बीच में बैठे थे और हम उनकी बायीं तरफ बैठे थे। इंटरवल के कुछ सेकेंड पहले उन्होंने बोला कि ये रेफरी की... हमने कहा, घंटी बजी... और वो बोल गये... रेफरी की घंटी बजी ... उसके बाद पॉज देने के बाद मेरी तरफ देखा... हम उठ गए... बोले, भैया, आपने हमसे क्या करवा दिया। हमने कहा, क्या हुआ.. .। फुटबॉल मैच की घंटी बजती है, जब फुटबॉल मैच खत्म होता है, कहीं रेफरी की घंटी बजती है। जब कमेन्ट्री खत्म हुई तो कुछ लोग उन्हें चिढ़ाने लगे...घंटी बज गई... घंटी बज गई। अब स्कंदगुप्त के बारे में आपको बताता हूं। वह कटक टेस्ट मैच में हमारे साथ थे। श्रीलंका और इंडिया का टेस्ट मैच चल रहा था। मैच के बाद एक ही कमरे में हम और गुप्त जी थे। यह हमारा सौभाग्य कि वे हमको समझाते रह गए, खाना खाने के बाद, सोने के पहले, कम–से–कम आधा घंटा–एक घंटा तक... वह हमको कमेंट्री के सारे पॉइंट समझाते थे... ''कमेंट्री क्या है... तुम जाओगे तो कैसे, क्या करोगे... खिलाड़ी को कैसे पहचानोगे। क्योंकि टेस्ट मैच में तो सब का ड्रेस होता है वाइट... वाइट पैंट और वाइट शर्ट...। पहचानने का तरीका उन्होंने बताया... इस बात को तुम याद रखो, घबराना मत, हम तुम्हारे साथ हैं...।'' इनकरेज करते थे वे। इसी दरम्यान मैंने देखा कि सुशील... वह कमेंटेटर बूथ में आकर पीछे खड़े हो जाते थे... हम लोगों की कमेंट्री चलती रहती थी और उनकी नजरें कभी कमेंटेटर पर और कभी ग्राउंड में होती थीं। बस उनकी तैयारी वहीं से चल रही थी... एक कमेंटेटर बनने की जो मंशा थी उनकी, वहां से ही होमवर्क करना शुरू कर दिया था और बाद में कमेंट्री करना शुरू किया था।

प्रश्न– हमारे जो युवा साथी हैं आजकल के, वह सोचते हैं कि कमेंट्री करना बहुत आसान है। चलो क्या है, बैठकर बोलना शुरु कर दिया... लेकिन आपने जो गहराई की बात इसमें बताई, इसके लिए पूरा ज्ञान होना चाहिए, जिस भी चीज की कमेंट्री आप कर रहे हों– चाहे खेल की करें, चाहे किसी यात्रा की करें या किसी विशेष अवसर पर करें– पूरी जानकारी के साथ पूरा स्टॉक होना चाहिए...।

उत्तर– एक वाक्या और आपको बताते हैं चंदू बोर्डे... क्रिकेटर थे, ऑलराउंडर... तो उनका हम इंटरव्यू ले रहे थे। बातों के सिलसिले में हमने उनसे पूछा कि आपका कोई मेमोरेबल मैच जो अभी तक आपको याद हो... हमारा यह प्रश्न था। उन्होंने उलटा प्रश्न किया हमारे ऊपर... बोले, ''...यादव तुम यह बताओ कि तुमको हमारा कौन–सा मैच याद है।'' हमने कहा कि चंदू दा... वो वेस्टइंडीज में जब आप फर्स्ट इनिंग में सेंचुरी ठोके थे, सेकंड इनिंग में आप 96 पर आउट हो गए थे...। विकेट पर गिर गए थे...। दोनों मैच में वह हंड्रेड स्कोर करने का रिकॉर्ड नहीं बना...। बोले कि ''नहीं, यह गलत है। मैंने फर्स्ट इनिंग में सेंचुरी मारा, सेकंड इनिंग में अगर हम सेंचुरी ठोक देते तो लोग याद नहीं करते... नहीं मारे इसी वजह से... तुम्हें भी याद है और मुझे भी वह मैच याद है...'' किसी चीज को अच्छे ढंग से पेश करने का एक अच्छा तरीका..

प्रश्न– वैसे तो हमारे यहां बहुत महान् खिलाड़ी हुए हैं और आपकी जो किताब

है, ''खेल के खोए सितारे' जिसमें बहुत सारे– खासकर बिहार के क्रिकेटर, हॉकी के प्लेयर, फुटबॉल के खिलाड़ी और बहुत सारे खिलाड़ियों का उसमें उल्लेख है। उनके बारे में बहुत अच्छा विवरण और बहुत सारे प्रसंग उसमें आपने जो लिखे हैं... मुझे याद आता है कि प्रेम कुमार जी का मैच था शायद और बीच में मैच में बाधा आ गई। उस जमाने में स्टूडियो में कोई पैनल नहीं होता था... बारिश हो गई या मैच रुका किसी कारण से, तो कॉमेंटेटर को सारा संभालना है... आजकल स्टूडियो में तो कई जर्नलिस्ट होते हैं, कई पैनल में कई लोग बैठते हैं... अगर बारिश हो गई या कोई व्यवधान हो गया तो तुरंत स्टूडियो ले आते हैं.... वहां बातचीत करते हैं आपस में....

उत्तर– इसी से संबंधित एक मैच के बारे में बताते हैं एक फुटबॉल टूर्नामेंट था। हम लोग जब पहुंचे तो वहां पर कोई तैयारी नहीं... मैच है और कोई तैयारी नहीं। अब तो हम लोग सोचने लगे कि रेडियो का अनाउंसमेंट हो गया था कि चार बजे से जो मैच है वह इस जगह है... अब हमारे जो कमेंटेटर.. वह नर्वस.. हमने कहा घबराओ मत... हो जाएगी प्रोग्रामिंग.. तो बोले, बद्री तो क्या किया जाए, स्टूडियो वापस चलें... हमने कहा, वापस जाने की आवश्यकता नहीं है। तो बोले, आधा घंटा टाइम लग जाएगा... मैंने कहा, ठीक है, देख लेंगे... तकरीबन 45 मिनट... जो कमेंटेटर हों उनकी हां में हां मिलाते रहिएगा... हम 'क्यू' देंगे ताकि यह ना पता चले कि आप डमी हैं, इतना तो कर ही सकते थे... 45 मिनट तक हमलोग बोलते रहे, उसके बाद मैच शुरू हुआ...। तो जब तक प्रिपरेशन नहीं रहेगा, आप उस गेम के बारे में नहीं जानेंगे, जो मैच हो रहा है, अगर उसका बेस्ट आपको मालूम नहीं होगा...।

एक और वाक्या हम सुनाते हैं, पटना में एक फुटबॉल क्लब था। उसमें मात्र दो साल हुए थे हमें खेलते हुए। तीसरे साल क्या हुआ कि एक ट्रेडिशनल मैच हुआ करता था, आजकल बंद हो गया... पटना में, 15 अगस्त को बाबू कुंवर सिंह टूर्नामेंट, जिसमें कि मोहन बगान की टीम आती थी हमेशा और उसका मुकाबला होता था पटना इलेवन से... अब हुआ यह कि 15 अगस्त के पहले, 12 या 13 तारीख को टीम अनाउंसिंग में बीस खिलाड़ियों के नामों की घोषणा की गई। उस समय हम 'कलेक्ट्रेट स्पोर्ट्स क्लब' से खेला करते थे। जब बीस खिलाड़ियों की सूची में हमारा नाम आया तो हमने सोचा थोड़ा और आगे आ जाते तो हम फर्स्ट इलेवेंथ में आ जाते। हमारे सेक्रेटरी थे भरत बाबू, जो कि नाजिर थे कलेक्ट्रिएट के, उनका अच्छा दबदबा था। उनसे मिलने हम गए। मैंने कहा, ''सर, ऐसी–ऐसी बात है.. . मेरा नाम आ गया है ट्वेंटी में...। अगर आप चाहें तो हम टीम में आ जाते, खेल लेते, मेहरबानी होती आपकी...'' बहुत शांत भाव से उन्होंने कहा– बद्री बैठो.. बैठ गया मैं उनके पास...। बोले, पहले यह बताओ कि सीनियर टीम में खेलते हुए तुम्हें कितने वर्ष हुए। मैंने कहा कि दो साल... बीस खिलाड़ियों में से नाम बताओ जो फर्स्ट इलेवन में हैं। मैंने कहा ... मन्ना दा, शशि नाथ, गौरीशंकर, जॉर्ज बेंजामिन... साहनी, अनवर... उन्होंने कहा, यह सभी प्लेयर जो हैं, संतोषजनक प्लेयर हैं? मैंने कहा, हां। तो बोले, क्या तुम अपनी उपलब्धि मान कर नहीं चलते हो कि मात्र दो सालों में तुम इन लोगों के बीच में आ गए। मैंने कहा, जी। ...तो सोचो... एक बात हम कहेंगे, यह कभी तुम भूलना मत...। उन्होंने एक छोटी–सी लाइन कही, 'फर्स्ट डिजर्व, देन डिजायर'... और आज तक मैंने इसे स्वीकारा है, इसे ही अपनाया मैंने। फिर हम पूरी तरह से तैयार होकर गए इस परीक्षा के लिए, अनाउंसमेंट के लिए... हम जब लिख कर अनाउंसमेंट करते थे तो कुछ लोग हंसते भी थे.. हमारी ड्यूटी होती थी तो... हम आज और कल के डिटेल लिखते थे...। प्रोग्राम और रिकॉर्डिंग के पहले हम रिहर्सल कर लेते थे, ताकि हम गलत ना करें, लड़खड़ाए नहीं, फ्लूएंटली बोलें....।

प्रश्न– मैं तो साक्षी रहा हूं कि आपका अनाउंसमेंट हमेशा लिखा रहता था... आप पढ़ते मिलते थे, कई बार रिहर्सल करते मिलते थे स्टूडियो के अंदर... आपने अभी फुटबॉल टीम की बात कही और उसमें आपने कई सारे नाम गिनाये... जिनमें से कुछ का उल्लेख आपने अपनी पुस्तक में भी किया है– सी. प्रसाद या मन्ना दा, शशि नाथ भगत या गौरी शंकर, अनवर, ताहिर हुसैन.... ताहिर हुसैन तो रेफरी बहुत मशहूर रहे... तो मैंने बहुत सारे किस्से पढ़े खिलाड़ियों के बारे में, कुछ उन खिलाड़ियों के बारे में बताएं कि कैसे खिलाड़ी थे...

उत्तर– सी. प्रसाद, मसौढ़ी के एक गांव के रहने वाले वह इंसान... खेल के प्रति समर्पित.... उनके पिताजी कोलकाता में थे पुलिस डिपार्टमेंट में, वह भी कोलकाता पुलिस में... तो फादर से इंस्पायर रहे होंगे वह, क्योंकि बचपन बीता कोलकाता में, अपने पिताजी को खेलते देखा होगा उन्होंने तो बचपन से ही उन्हें एक नशा... फुटबॉल के प्रति एक जुनून सवार हो गया था बचपन से ही और उनकी तमन्ना थी कि हम अपने देश का प्रतिनिधित्व करें। नागेश्वर बाबू थे पाटलिपुत्र स्कूल के गेम टीचर... वे भी मसौढ़ी के आस–पास के गांव के रहने वाले थे। उन्होंने देखा सी. प्रसाद को खेलते हुए तो कहा कि पटना चलो।

उन्हें पटना ले आए। पटना फुटबॉल क्लब से एक मैच में पीएमसीएच की ओर से उन्हें खेलने का मौका मिला जिसमें कि वह खरे नहीं उतरे, बहुत बेकार प्रदर्शन हुआ। नागेश्वर बाबू का पीएमसीएच के खेल अधिकारियों ने मजाक उड़ाना शुरू कर दिया कि क्या भाई साहब, आप कैसे लड़के को ले आए... यह देहाती सिक्का तो खोटा निकला... इसको ले जाइए। अब जो बेइज्जती हुई मास्टर साहब की सी. प्रसाद की वजह से... तो बाद में यह रोने लगे, बहुत देर तक रोते रहे... इनको ग्लानि हुई कि हमारी वजह से मास्टर साहब की बेइज्जती हुई...। फिर गांव पहुंच कर उन्होंने वह परिश्रम किया निष्ठा और लगन के साथ कि इत्तेफाक से पीएमसीएच को एक खिलाड़ी की आवश्यकता पड़ गई। एक अच्छे मैच में बिहार पुलिस के खिलाफ हार मानकर उन लोगों ने इनको बुलाया। प्लेयर शॉर्ट कर रहा है, प्लेयर की कमी है, एक आदर्श टीम में ग्यारह खिलाड़ी नहीं पहुंच रहा है, वह परिश्रम, लगन व निष्ठा, जो समर्पण की भावना काम आती है... ये उस मैच में अच्छा किए...। फिर सेलेक्ट हो जाते हैं और वहीं से उनकी यात्रा शुरू हो जाती है...।

प्रश्न– मैंने खिलाड़ियों और खेलों को निकट से देखा है क्योंकि उनसे मेरा निकट का संपर्क रहा है। मैं स्वयं भी खिलाड़ी रहा हूं... क्रिकेट में डिस्ट्रिक्ट लीग तक खेला है, इसलिये ये बात कह सकता हूं कि अक्सर ऐसा होता है कि जो बड़े सितारे रहे हैं, उनको संघर्ष बहुत करना पड़ा है...। सचिन तेंदुलकर के बारे में कहा जाता है कि वह कभी बाउंड्री लाइन पर बॉल उठाया करते थे जब छोटे थे... बाद में वो कितने बड़े महान् खिलाड़ी बने....। और ऐसे कई प्रसंग हैं, बड़े–बड़े खिलाड़ियों के बारे में यह कथाएं सुनने को मिलती हैं कि कितने संघर्ष के बाद वो सितारा बनता है...। तो यह सब चीज़ें सीखने की होती हैं और आज की पीढ़ी को जरूर यह सीखना चाहिए। लेकिन मैं जिस बात की चर्चा आपसे खास तौर से करना चाह रहा हूं कि आपने जिन खिलाड़ियों का जिक्र करते हुए उल्लेख किया है कि एक भेदभाव– खास तौर से क्षेत्रीयता को लेकर– भेदभाव होता है...। अगर बिहार का खिलाड़ी है तो वह बंगाल में नहीं जा सकता, बंगाल का खिलाड़ी है तो वह राजस्थान में नहीं खेल सकता या कहीं भी... इस तरह का प्रसंग मैंने पढ़ा है.. तो क्या वाकई इसमें सच्चाई है....?

उत्तर– हम फुटबॉल की चर्चा करते हैं। उससे आप तुलना कर सकते हैं दूसरे खेलों की। जैसे कोलकाता है... एक जमाने से भारतीय फुटबॉल का मक्का–मदीना माना जाता है। अगर किसी भी प्रांत का अच्छा खिलाड़ी है उसकी ख्वाहिश होती थी, अभी भी होती होगी कि हम बंगाल में खेलें। अगर आप किसी स्टेट के अच्छे खिलाड़ी हो, अपने स्टेट में ही खेलते रह गए... अगर तुमको दरवाजा खटखटाना है भारतीय फुटबॉल का, तो तुम को कोलकाता में जाकर खेलना अनिवार्य है। जब तक तुम अपनी क्षमता का परिचय कोलकाता में नहीं देते, तो तुम अपनी महत्वाकांक्षा पूरी नहीं कर पाओगे। यही कारण था कि बड़े–बड़े खिलाड़ी अपने राज्यों से आते थे कोई ईस्ट बंगाल से... उनकी नौकरी अगर रेलवे में हो गई तो रेलवे से....

प्रश्न– इसमें और भी प्रसंग मैंने सुना है या पढ़ा है शायद कि वह काफी अच्छा खेल रहे थे और फिर उनको धोखे से जमालगोटा पिला दिया गया....

उत्तर– ऐसा होता है, संभव है...। सी. प्रसाद के साथ ही... हम क्योंकि करीबी थे... बी एन कॉलेज में हम एक साथ थे... उन्होंने बताया कि जब हमारा सेलेक्शन हो गया भारतीय टीम से, तो जरनैल सिंह कैप्टन थे, वो कैप्टन स्टॉपर से खेलते थे, सी. प्रसाद भी स्टॉपर... उन्होंने इनको चांस दिया ही नहीं, जब कभी भी गए बाहर विदेशों में... तो इनको मौका नहीं दिया...। वह इनसे घबराते थे कि अगर इस बिहारी लड़के को हमने चांस दिया तो यह छा जाएगा और हम टीम से बाहर हो जाएंगे...। घटना है यह कि बैंकॉक के एक मैच में चांस उनको नहीं मिला... जो शुरू से नहीं दे रहे थे नहीं मिला... बस यह भिड़ गए... और दोनों व्यक्तियों में मारपीट हुई। यह समझ लीजिए कि जब आप टॉप पर पहुंच जाते हैं तो वहां पर भी आपकी बेइज्जती होती है... लेकिन उस समय आपको सावधानी से काम लेना होगा। आपने क्रिकेट मैच में देखा होगा... यह जो टी–20 मैच है, जडेजा को बैठा दिया जाता है... आठ–नौ मैचों में, लास्ट में उसको चांस मिलता है। जडेजा जैसा सीनियर प्लेयर तो बर्दाश्त करके रह गया... उसने कोई स्टेटमेंट नहीं दिया... क्यों नहीं खिलाया गया मुझे... ज्यादती हो रही है मेरे साथ... । वह चुप रहा। बाद में जब विराट कोहली को खेलाना पड़ा तो आप तो उनको बैठाए हुए हैं जानबूझकर, उसकी बेइज्जती कर रहे हैं... यह सब होता है। लेकिन एक खिलाड़ी जो है, उसे सहनशील माना जाता है। उसमें ऑब्जर्ब करने की क्षमता होती है और टीम को जिताने के लिए त्याग की भावना भी होती है, इसी को 'खेल–भावना' भी कहते हैं और बड़े–बड़े खिलाड़ी... वह किसी बात को भूलते नहीं हैं।

प्रकाश पादुकोण... आए हुए थे यहां पर.. मैंने कहा कि प्रकाश साहब हम आपका इंटरव्यू लेना चाहते हैं... उन्होंने कहा ठीक है। बस, इतनी ही बात हुई।

वह चले गए टूर्नामेंट में हिस्सा लेने के लिए यहीं श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में...। फिर लास्ट डे टूर्नामेंट का... मिले उनसे हम... हमने कुछ नहीं कहा उनसे। हम पर नजर पड़ते ही कहा, 'ओह सॉरी... सॉरी... सॉरी...'। उन्होंने पूछा, टेप रिकॉर्डर है। हमने कहा, नहीं...। हमने आपसे कहा था इंटरव्यू देंगे... हमने कहा, छोड़िए। अच्छे से उन्होंने कहा कि अभी मैच में दो घंटे देर है, अगर आप कुछ अरेंजमेंट कर सकते हैं तो करें। हमने कहा गाड़ी तो हम नहीं लाए हैं। उन्होंने कहा, गाड़ी हम बंदोबस्त कर देते हैं। संडे का दिन था। उन्होंने गाड़ी लिया ऑफिशियल्स का... आ गए रेडियो स्टेशन.. खरात साहब उस समय स्टेशन डायरेक्टर थे। दरवाजा उनका बंद... खुलवाया... खरात साहब की नजर हम पर पड़ती है उसके बाद नजर पड़ती है प्रकाश पादुकोण पर... तो खरात साहब कहते हैं... अरे, प्रकाश पादुकोण...। अब कहते हैं खराट साहब... इनको तुम कहां से पकड़ कर लाया बद्री। हमने कहा सर, इनका इंटरव्यू लेना है और स्टूडियो में इंटरव्यू अच्छा जाएगा... तो बहुत खुश हुए... उनको भी बहुत खुशी हुई... वह इंटरनेशनल प्लेयर थे ... जैसे आपकी बात करें तो आपने अपने कार्यालय में अनेक बार हमसे कहा कि भैया, चलिए स्टूडियो, हम आपका इंटरव्यू लेते हैं....।

प्रश्न– वहां तो आपने मेरी बात नहीं मानी... बहुत विनम्रता के साथ उसको आपने अस्वीकार कर दिया... संकोच भी उसके पीछे रहा होगा शायद...

उत्तर– संकोच नहीं था... सवाल यह है कि आपने कर्तव्य दे दिया, उस कर्तव्य का पालन भी तो करना है, उसे कैसे छोड़ें...?

प्रश्न– लेकिन इच्छा मेरी बहुत थी... तो चलिए इस बहाने ही आपसे साक्षात्कार हो रहा है... इस साक्षात्कार से तो बहुत सारे लोग सीखेंगे और इसे पढ़कर बहुतों को आनंद आयेगा, हम ऐसी उम्मीद करते हैं।

उत्तर– हम यह कहना चाह रहे हैं कि आपसे भी लोग सीख सकते हैं बहुत कुछ..आप कर्तव्यपरायण, कर्तव्यनिष्ठ और अनुशासित हैं। जहां भी आप रहे, जिस भी केन्द्र पर आपकी नियुक्ति हुई, आपने उस केन्द्र को सजाया–संवारा– यह सच्चाई है.

प्रश्न– आप जैसे लोग मार्गदर्शक, प्रेरणा के स्रोत मुझे हमेशा मिले, हर जगह मिले और मैंने सिर्फ अपना कर्तव्य समझकर जो भी काम किया, वह किया। आप जो बात कह रहे थे... राजनीति तो थोड़ी–बहुत चलती है खेलों में... खेल–भावना से ऊपर उठके उन चीजों को याद भी रखते हैं तो कभी जिक्र नहीं करते...। उसको भुलाने की कोशिश करते हैं और फिर से खेल में रम जाते हैं। बिहार में जो खेलों की स्थिति है– एक समय था कि मोइनुल हक स्टेडियम जो यहां का एकमात्र बड़ा स्टेडियम है, इसके बारे में कहा जाता था कि यह एक इंटरनेशनल मैच के लायक है और मुझे याद है कि शायद वह 1974 था या 1973 था, पता नहीं। इसमें पहले विश्व कप महिला क्रिकेट का एक मैच हुआ था। तो जैसे बड़े शहरों के मुकाबले कुछ छोटे शहर हैं– जैसे कानपुर है, कटक है, मोहाली है और भी कई हैं– तो ऐसे क्या पटना के मोइनुल हक स्टेडियम को एक इंटरनेशनल लेवल का नहीं बनाया जा सकता जिसमें कि अंतरराष्ट्रीय स्तर के मैच हों, क्रिकेट मैच हों, जो दर्शक देख पाएं....

उत्तर– किशोर जी, शुरुआत तो हुई थी पटना के मोइनुल हक स्टेडियम से... अंतरराष्ट्रीय मैच भी हुए यहां पर... संतोष ट्रॉफी फुटबॉल टूर्नामेंट का भी आयोजन हुआ है... पाकिस्तान और इंडिया की टीम यहां आकर खेल चुकी है...। अगर आप कुछ करना चाहिएगा तो कहीं भी, किसी भी तरह से इसमें आयोजन कर सकते हैं। आप तो खुद एक उदाहरण हैं। आप ही बताइए कि पहले स्कूल में, कॉलेज में, इसके अलावे पटना का मोइनुल हक स्टेडियम, साइंस कॉलेज का ग्राउंड हो, पटना कॉलेज का ग्राउंड हो, फुलवारी शरीफ में मिथिलेश स्टेडियम– सारी जगहों पर खेलों के आयोजन होते रहते थे, अब बंद क्यों हो गए...।

प्रश्न– इसमें एक कमी है कि अब मैदान रहे कहां, मैदान तो सारे खत्म हो गए धीरे–धीरे करके... यह भी एक कारण मुझे लग रहा है।

उत्तर– क्या आज जो मैदान है, वह पहले नहीं थे। उन मैदानों का रखरखाव तो अच्छे ढंग से हुआ न...

प्रश्न– उस समय होता था... अब नहीं होता...

उत्तर– क्यों नहीं होता... जब आपके पास हैंड की कमी नहीं है... क्या मोइनुल हक स्टेडियम में स्टाफ नहीं है जो मैदान की देख–रेख करे...। क्या सुविधाएं नहीं हैं, उनके कर्मचारी नहीं हैं कि खेल के मैदान को ठीक–ठाक से रखें....। मुझे याद है, प्रिंसिपल थे नागेंद्र नाथ...। हॉकी ग्राउंड, साइंस कॉलेज का... हम उस समय एथलेटिक के सेक्रेटरी थे। हम दोनों कुछ बात कर रहे थे... दो–तीन लड़के ग्राउंड को क्रॉस करके जा रहे थे। हमसे नागेंद्र बाबू ने पूछा, बद्री, यह लोग जा रहे हैं... आवाज तो लगाओ...। हमने पुकारा... वह दौड़ कर भाग गए... पीछा किया हमने, वे लोग इंजीनियरिंग कॉलेज के थे। हमने कहा, सर वह अपने कॉलेज के स्टूडेंट नहीं थे। तो मैदान के चारों तरफ 'कीप ऑफ द ग्रास' का बोर्ड

लगा होता था... माली हुआ करते थे जो खेल के मैदान की रखवाली किया करते थे... कहां चले गये वो.. आप उनसे अपने घर का काम करवाएंगे और चाहेंगे कि ग्राउंड भी सही रहे, तो यह होगा, नहीं हो सकता है। पहले जो टूर्नामेंट होते थे कॉलेज में, वह बंद क्यों हो गए.... क्यों नहीं उस टूर्नामेंट का संकल्प करते हैं एक बार फिर से... खेल होगा तो ग्राउंड भी दुरूस्त हो जायेगा।... आज मोइनुल हक स्टेडियम में काम शुरू हो गया है... देखिएगा कि वह चमक जाएगा।

प्रश्न– उस समय मैदान का रख–रखाव अच्छे से होता था, अब नहीं होता। एक इच्छा–शक्ति होनी चाहिए। आपने अच्छा जिक्र किया कि उस समय बहुत सारे टूर्नामेंट होते थे जो बिहार में आयोजित होते थे। बिहार ट्रॉफी, रणजी ट्रॉफी और कई ऐसे मैच होते थे यहां। लेकिन धीरे–धीरे अब यहां के खिलाड़ी बाहर जाकर खेलने लगे। कई तो जमशेदपुर चले गए, कुछ बंगाल चले गए, कुछ मुंबई चले गए.. बिहार में माहौल होता तो खिलाड़ी यहां से सेलेक्ट होते, यहां का क्रिकेट बोर्ड शायद उतना सक्षम नहीं है.. .।

उत्तर– सवाल यह है कि खिलाड़ियों का पलायन क्यों हो रहा है। पहले से सुविधाएं बढ़ी हैं। पहले के खिलाड़ियों को इतनी सुविधाएं नहीं मिलती थीं, जितनी आज मिल रही हैं। पहले के खिलाड़ियों को खेलने के लिए पैसे नहीं मिलते थे, जो आज मिल रहे हैं... आज तो काफी पैसा है... तो क्या बात है कि खेल के आयोजन नहीं हो पा रहे हैं...। मुख्य कारण यह है कि आज हर चीज एक फैशन बन गया है, ये खेल भी एक फैशन बन गया है, जिसकी वजह से क्वांटिटी बढ़ी है, क्वालिटी में डिटोरियेशन हुआ है, आप इस बात से इन्कार नहीं कर सकते...।

प्रश्न– मैंने तो कई खिलाड़ियों को देखा है कि बिहार में खेलने के चलते बाहर नहीं गए तो एक्सपोजर नहीं मिला...। रमेश सक्सेना जैसे खिलाड़ी जो हमारे यहां के थे, बिहार के... वह जो उनकी पहचान और पूछ होनी चाहिए थी राष्ट्रीय लेवल पर, वह तो नहीं हो पाई...।

उत्तर– रमेश सक्सेना दिल्ली से आए बिहार में। गजब के बैट्समैन थे वोय लेकिन सवाल यह है कि आज तक हम रणजी ट्रॉफी क्यों नहीं जीत पाए... बिहार कभी भी रणजी ट्रॉफी विजेता नहीं हुआ। उसी तरह से फुटबॉल में आप देखेंगे तो संतोष ट्रॉफी... सभी फाइनल में बिहार की टीम पहुंचती है, लेकिन आज तक हम संतोष ट्रॉफी नहीं जीत पाए...। तो इन प्रश्नों पर ध्यान क्यों नहीं जाता...। हमने अपनी पुस्तक 'खेल के खोए सितारे' में यह दर्शाया है कि पहले के खिलाड़ी... पहले यह कहावत थी कि 'खेलोगे कूदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब'.... उस माहौल में, उस वातावरण में हमारे बुजुर्ग खिलाड़ियों ने, अपने मां–बाप की इच्छा के विरुद्ध जाते हुए, खेल को अपनाया... उन्होंने जो खेला, उसी से सीखा और फिर अपने प्रखंड, अपने गांव, अपने शहर, अपने राज्य और अपने देश का नाम रोशन किया...। जिसके उदाहरण सी. प्रसाद हैं... मसौढ़ी का एक देहाती लड़का क्या कहलाता... तो उन बुजुर्ग खिलाड़ियों की देन है कि कंट्री लेबल पर सन् 1928 से 1956 तक हम ओलंपिक विजेता रहे। हॉकी में 1964 में टोक्यो ओलंपिक में हमने स्वर्ण पदक जीता फिर से... और 1980 में मॉस्को ओलंपिक में आखिरी बार हॉकी में भारत जीतता है स्वर्ण पदक...। उसके बाद बीस साल उधर, बीस साल इधर... चालीस साल हो गए, अभी तक भारतीय हॉकी को स्वर्ण पदक नहीं मिला है। अब फुटबॉल की बात हम करें तो 1951 के दिल्ली एस आई खेलों के विजेता हम रहे हैं... 1962 में हम जीते... उसके बाद हमको संतोष करना पड़ा है ब्रोंज मेडल से स्वर्ण नहीं जीता हमने...। ध्यान चंद कहां के थे, भारत के थे न...! प्रकाश पादुकोण कहां के ऐं... उमेश शर्मा अपने बिहार के गजब के बैडमिंटन खिलाड़ी... कैसे भूलेंगे आप उनको... सी. प्रसाद... मिकी माउस...।

प्रश्न– आपने बहुत सारे खिलाड़ियों के नाम लिए। ऐसे अनगिनत खिलाड़ी हैं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय पहचान भी बनाई... । सबा करीम जैसे खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हमारे क्रिकेट टीम का हिस्सा भी रहे बहुत लंबे समय तक, बहुत अच्छे विकेटकीपर–बैट्समैन वह रहे हैंय लेकिन महिला खिलाड़ी... आजकल तो खूब प्रचार–प्रसार खेलों का हो रहा है, पर कितना आगे खिलाड़ी जा रहे हैं या अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों में बिहार की भागीदारी कितनी हो रही है, अलग बात हैय लेकिन महिला खिलाड़ी... यहां बिहार में अभी महिला खेलों की क्या स्थिति है...।

उत्तर– पहले से तो बढ़ोतरी हो रही है। हमें मौका मिला और हम उन मौकों का फायदा नहीं उठा सके। जैसे बूला चौधरी बंगाल की थीं... स्वीमर... बहुत अच्छी... उनको स्विमिंग के प्रचार और प्रसार के लिए बिहार स्वीमिंग एसोसिएशन ने जमशेदपुर बुलाया, लेकिन हम बूला चौधरी का फायदा नहीं उठा सके... सरोजनी गोगटे बैडमिंटन... इंडिया नंबर वन भी रह चुकी हैं...। उनके हसबैंड सुरेश गोगटे वह क्रिकेट के बहुत बड़े प्लेयर थे... उनसे हमारी बात होती थी...। उनके फादर एन. आर. गोगटे एयरफोर्स में थे, रिटायरमेंट के बाद उन्हें बिहार

फ्लाइंग क्लब में चीफ इन्स्ट्रक्टर के पद पर नियुक्त किया गया.... उनसे भी हमने फायदा नहीं उठाया। हमारे फुटबॉल के कोच शैलेन मन्ना बहुत नामी खिलाड़ी... वह पहले आया करते थे मुजफ्फरपुर, वहां के खिलाड़ियों को ट्रेनिंग देने के लिए....। कुछ साल तक उन्होंने ट्रेनिंग दी। उस समय मुजफ्फरपुर फुटबॉल एसोसिएशन में आर. एन. मेहता साहब थे।... अचानक एक बार आये और बोले कि अब हमको आप छोड़ दो, हम अब नहीं आएंगे यहां... तो मेहता साहब बोले, कुछ तकलीफ हुई आपको, कुछ कमी लगी स्वागत् में...। बोले, कमी कुछ नहीं है बाबा, सब ठीक–ठाक है... खाना–पीना बहुत अच्छा है...। सब आराम है हमको... लेकिन हुआ यह कि हम इतने दिन तक ट्रेनिंग दिए आपके बच्चे को.... बच्चे तो फार्म में नहीं आए, हम फ़ॉर्म में आ गए..। उनके कहने का अर्थ था कि बच्चे नहीं सीख पाए, पर वो ट्रेनिंग देकर पहले जैसे बन गये। तो हम अवसर का फायदा कहां उठा पाते हैं...।

प्रश्न– अभी मैंने जिन कमेंटेटर का जिक्र किया... जसदेव सिंह जी हों या माल्विन डिमेलोय कॉमेंटेटर होने के साथ–साथ, एक अधिकारी के तौर पर भी रहे, हमारी आकाशवाणी से जुड़े रहे, काफी नाम कमाया... बहुत अच्छे ब्रॉडकास्टर थे माल्विन डिमेलो। उनका एक रेडियो फीचर 'लॉयन ऑफ गिर' राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित भी हुआ था। कहते हैं कि उस फीचर के लिये शेरों की गतिविधियां रिकॉर्ड करने के उद्देश्य से वो हफ्तों 'गिर' के जंगलों में मचान बांधकर रहे थे। आप स्वयं भी बहुत अच्छे ब्रॉडकास्टर रहे... और भी, जैसे डॉ. प्रेम कुमार, वह अंग्रेजी के प्रोफेसर थे, डॉ. समीर सेनगुप्ता... वे अर्थशास्त्र प्रोफेसर थे। समीर सेनगुप्ता तो नाटक किया करते थे। बिहार आर्ट थियेटर से जुड़कर बहुत–से नाटक लिखे भी उन्होंने... रेडियो के लिए भी लिखे, रंगमंच के लिए भी लिखे... और आपने भी बहुत सारे नाटक किए हैं खेलों के अलावा भी.... नाटक की तरफ आपका रुझान कैसे हुआ...?

उत्तर– सच्चाई यह है कि पहले दशहरा के अवसर पर संगीत के आयोजन हुआ करते थे और मोहल्ले के नुक्कड़ पर ड्रामा खेला जाता था। मुझे याद है, कदमकुआं मुहल्ला और लोहानीपुर और लोदीपुर... तीन–चार जगहों पर हर साल नाटक का मंचन हुआ करता था। हमारे कदमकुआं मोहल्ले में जो नाटक होता था, उसमें हमें दो नाटकों में काम करने का मौका मिला। हम उस समय 10.11 साल के रहे होंगे.. प्यारे मोहन सहाय जी, भगवान प्रसाद और लालाजी थे, रामविलास जी थे और भी लोग थे... तो बाबू वीर कुंवर सिंह का प्ले था चतुर्भुज जी का... उसमें डगलस का रोल किया था। उसके बाद बहुत लंबे अरसे तक नाटक से अलग हो गया। यूनिवर्सिटी गए, वहां पर यूथ फेस्टिवल का आयोजन किया जा रहा था दिल्ली में। उसके लिये टीम जानी थी। हमें अच्छी तरह से याद है कि उस वर्ष, यानी 1960.1961 कि हम बात कर रहे हैं... कि शाहाबाद, गया और पटना– तीनों एक ही यूनिवर्सिटी थीं। तो सबसे पहले हम लोगों का कंपटीशन हुआ गया और शाहाबाद में, पटना अव्वल आई। हमलोगों की टीम के नाटक का नाम था 'पागल'... वो सेलेक्ट हुई... ऑल ओवर इंडिया में हम लोग का यह 'पागल' फर्स्ट घोषित हुआ। यह उपलब्धि प्राप्त हो गई मां सरस्वती की कृपा से...। रेडियो में गए, ड्रामा आर्टिस्ट बने... भोजपुरी के, मगही के... तो लगाव रहा...। सतीश आनंद जी एक अच्छे नाटककार थे। उन्होंने हमसे कहा एक बार कि बद्री, एक काम करो... 'तुगलक' में रोल करोगे...। मैंने कहा, ठीक है... आपने कहा तो करेंगे...। दस–पन्द्रह दिन हमने रिहर्सल किया... अचानक, एट ए टाइम हमको दो जगह से कॉल आ गया.... एक संतोष ट्राफी फाइनल की कमेंट्री करने के लिए और एक रणजी ट्रॉफी मैच की कमेंट्री करने के लिए... हम तो उधेड़बुन में... हमने सतीश जी को कहा... हमको माफ कर दीजिए...हमको छोड़ दीजिये...। बोले, क्या बात है। हमने कहा, ऐसी–ऐसी बात है... तो वह बोले, तुम कमेंट्री करके आओ, उसके बाद देख लेंगे...। हमने कहा, नहीं भइया... हम प्ले के साथ ईमानदारी नहीं कर पायेंगे... हमको माफ कर दीजिए। पर हम अलग–थलग हो गये, ऐसी बात नहीं है। फिर हमने टेलीविजन को पकड़ा...।

प्रश्न– आपके बारे में मैं क्या बताऊं... आज के लोगों को आपसे सीखना चाहिए, आपसे प्रेरणा लेनी चाहिए। हमलोगों ने तो काफी लिया है आपसे... जो कुछ भी थोड़ा–बहुत बोलने या कहने आता है, अपने को अभिव्यक्त करने आता है। वह आप ही जैसे लोगों से सीखा है। आज की पीढ़ी से मैं यह कहना चाह रहा हूं कि बद्री जी समय के हिसाब से चलते रहे, अपने समय को छोड़ा नहीं... समय जैसे–जैसे बदला, वैसे–वैसे आप अपने को बदलते गए.... जब नाटक का जमाना था, आपने नाटक किया। जब विजुअल का जमाना आया तो आपने टेलीविजन पर सीरियल किया... तो यह लोगों के सीखने की बात होती है... तो सीरियल के तरफ कैसे झुकाव हुआ आपका...।

उत्तर– नाटक हो या रंगमंच... कलाकार जो है, वह अपने आप को रोक नहीं सकता। वजह... उसे खुजली होती है... वैसे ही होती है। जब कभी नाटक में या रेडियो प्ले में काम करने का मौका मिला, काम किया... दूरदर्शन, बिहार के लिए

होम प्रोडक्शन में भी मैंने काम किया, फीचर फिल्म में भी... दो–तीन फीचर फिल्म में काम किया, लेकिन वह फिल्म हम देख नहीं पाए... एक जैन धर्म पर आधारित फिल्म बनी थी, नाम था 'नेवर बिफोर', जिसकी शूटिंग नालन्दा में हुई थी... तो बहुत अच्छा लगा। फिर 'दास्ताने–जुर्म' में कम–से–कम तो सौ से ज्यादा एपिसोड में काम किया है। तो कारवां चलता रहा। सबसे बड़ी बात कि मुझ में यह आदत है कि हमने आपसे भी बहुत कुछ सीखा है... मेरी सीखने की टेंडेंसी अभी भी कायम है, वह खत्म नहीं हुई... एक बच्चे के अच्छे गुण को भी हम देखते हैं, निहारते हैं और उससे भी सीखने की कोशिश करते हैं। किसी काम को छोटा नहीं समझना चाहिए, एकाग्रचित्त होकर समझना चाहिए सच्ची लगन और निष्ठा के साथ...। बड़े–बड़े खिलाड़ी– जैसे सचिन तेंदुलकर– ऐसे ही सचिन तेंदुलकर नहीं बन गयेय उन्होंने कड़ी मेहनत की... उन्हें भी ह्यूमिलियेट किया गया होगा पर उन्होंने उसे बर्दाश्त किया होगा... अपने स्तर पर हर लेबल पर काम चलता रहता है... नीचे के स्तर पर भी, ऊपर के स्तर पर भी...।

प्रश्न– आपने इतने सारे काम किये... आप उद्घोषक रहे, पायलट रहे– पायलट का लाइसेंस नहीं मिला तो क्या हुआ, आपने प्रशिक्षण तो प्राप्त किया पायलट का... तो पायलट के गुण तो आप में आ ही गए... इसके अलावा आप कमेंटेटर रहे, खेल–समीक्षक रहे, पत्रकार रहे.... आपने पुस्तक लिखी, लेखक भी आप रहेय आपने नाटक किया, सीरियल किया और खिलाड़ी तो आप रहे ही हैं... अब ये बताइए कि आपका ऐसा कौन–सा फील्ड है, जो छूटा हुआ है और जो आप करना चाहते हैं....

उत्तर– वह तो जो क्षमता हो सकती है। रिटायरमेंट के बाद एक तो लॉकडाउन में आदमी ऐसे ही डाउन हो गया है, लेकिन वह सुस्तीपन अभी हममें नहीं है... इसलिए नहीं आया है कि हमारे जो बच्चे हैं– एक पोता, एक पोती– उन लोगों को मैं लेकर बैठ जाता हूं...एक नाती है, एक नतनी है। उसे पढ़ाता तो नहीं पर दिशा–निर्देश देते रहता हूं कि तुम को यह करना है, वह करना है, काम में लगे रहो... तो यह सब बातें चलती रहती हैं जिसकी वजह से जो सूनापन है, हम उसे हावी नहीं होने देते। मुख्य कारण यही है, अपने आप को व्यस्त रखना... तो यह सब बातें हैं... साधारण–सी बातें हैं, लेकिन बहुत मीनिंगफुल यह बातें हैं...।

प्रश्न– सच में, आपका व्यक्तित्व प्रेरणादायक है और मुझे लगता है कि इस बातचीत से भी बहुत सारे लोग आशान्वित होंगे और आप से प्रेरणा ग्रहण करेंगे... निश्चित तौर पर काफी बल मिलेगा आपकी बातों से... जो लोग जीवन में कुछ करना चाहते हैं...। तो मैं आप का बहुत शुक्रगुजार हूं कि आपने अपना कीमती वक़्त निकाला।

उत्तर– यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। अब उस स्टेज पर तो पहुंच ही गए हैं। पहले आदेश देते थे अपने बच्चों कोय अब अपने बच्चों के आदेश का पालन करना पड़ता है। तो कहने का मतलब यह है कि हम इस मामले में भाग्यशाली हैं कि हमें अच्छा वातावरण मिला। रेडियो में गए, एक–से–एक विद्वान आदमी, श्रेष्ठ व्यक्ति, साइंस के स्टूडेंट से पाला पड़ गया, स्वस्थ प्रतिद्वंद्विता, उसमें हिस्सा लिया। इत्तेफाक से साइंस कॉलेज का स्टूडेंट बना। वहां भी माहौल बहुत अच्छा, खेलो और पढ़ो। पत्रकारिता, उसमें भी वही बात। सीरियल करना, उसमें भी एक से एक आर्टिस्ट– जैसे अखिलेश्वर जी, सुमन जी, गणेश जी, प्यारे भैया– इन सबसे भी बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। हम जहां भी रहे– जैसे फ्लाइंग क्लब में पायलट से मिलना और उनको देखकर यह समझना कि वह पायलट जमीन पर चलने वाले इंसान को कुछ समझता ही नहीं है। यह बात नहीं है कि उसे घमंड है, अहंकार है। वह जानता है कि यह जीवन क्षणभंगुर है, हम लोग सिर्फ किताब में पढ़ते हैं, लेकिन वह व्यक्ति हमेशा यह सोचता है कि हम फ्लाइंग में जा रहे हैं, लैंड करेंगे कि नहीं करेंगे, यह कोई ठीक नहीं है, यह बिल्कुल अनसर्टेन है, लैंड करेंगे तो समझिए हम घर पहुंच गए। तो वह जीती–जागती तस्वीर पेश करने वाला। तस्वीर को देखने वाला व्यक्ति कहे कि मौत के मुंह में जा रहे हैं, लेकिन बहादुरी के साथ जा रहे हैं। डर कर फ्लाइंग में नहीं जा रहा है। तो बहुत–कुछ सीखने का मौका मिला एक–दूसरे से। डॉ. एन आर गोप थे। उनकी हाइट छे–साढ़े छे फुट रही होगी, क्या मस्तमौला आदमी थे, बिल्कुल निपुण, एक्सपर्ट। उतनी हिम्मत उनके पास कि पूछिए मत, उतने ही चुस्त–दुरुस्त। उनको देख कर यह साबित हो गया कि आज हमारे इंडियन एयर फोर्स के पायलट की इतनी इज्जत क्यों है।

प्रश्न– बिल्कुल, इतनी बातचीत हो गयी... लगता है कि यह बातें होती रहें, होती रहें, होती रहें। आपका बहुत–बहुत आभार आपको प्रणाम बद्री भैया... आशीर्वाद दें आप....।

उत्तर– आशीर्वाद है किशोर जी, सिर्फ इतना कह लेने दीजिए कि आपको हम हमेशा छोटे भाई की तरह मानते रहे हैं, मानेंगे... आपने जो हमें याद किया, आपने हमें गुमनामी के अंधेरे से बाहर निकाला... इस बात के लिए आपका बहुत–बहुत शुक्रिया...।

प्रश्न– आप गुमनामी में नहीं हैं, आपको लगता हैय लेकिन आपको जानने वाले, आपको प्यार करने वाले लोग इस दुनिया में बहुत हैं... जिनमें से मैं भी एक हूं...। बहुत–बहुत आभार आपका।

❐

ग्रीष्म ऋतु के टेस्टी पेय

✍ **किरण उपाध्याय,** रेसिपी एक्सपर्ट

सामाग्रियां–

(1) तरबूज, अनानास, खीरा,संतरा(इन सभी को छोटे–छोटे टुकड़ों में काटकर एक–एक कटोरी में रख लेंगे)।

(2) नींबू का रस, पुदीने की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां, ग्लूकोन C और D।

(3) पिसी हुई चीनी या मधु , नींबू के बारीक और छोटे छोटे कटे हुए टुकड़े, कूटी हुई कालीमिर्च, पिसी हुई सौंफ , ठंडा पानी और बर्फ के टुकड़े।

पेय बनाने की विधिः

(1) तरबूज पेयः–

सर्वप्रथम हम एक गिलास में थोड़े से कटे हुए तरबूज, स्वाद अनुसार चीनी या मधु , कुछ पुदीना और तुलसी की पत्तियां (4 से 5), एक चम्मच नींबू का रस डाल देंगे। अब हम इलायची कूटने वाले से इन सब को गिलास में ही कूट (क्रश) लेंगे। अब हम इसमें ठंडा पानी, बर्फ और कुछ नींबू के टुकड़े डालकर चम्मच से चला लेंगे।

(2) अन्नानास का पेयः–

सर्वप्रथम हम एक गिलास में थोड़े से अन्नानास के टुकड़े, पिसी हुई चीनी या मधु स्वाद अनुसार, पुदीने और तुलसी की पत्तियां (4 से 5), एक चौथाई चम्मच नींबू का रस डाल देंगे। अब हम इन सभी को क्लास में ही क्रश कर लेंगे। अब हम ठंडा पानी बर्फ के टुकड़े और कुछ नींबू के टुकड़े डालकर चम्मच से मिला लेंगे।

(3) संतरे का पेयः–

सर्वप्रथम हम एक गिलास में संतरे का रस (संतरे को बीच में से नींबू की तरह काट लेंगे) निकाल लेंगे, अब हम इस ग्लास में तरबूज के कुछ टुकड़े, पिसी हुई चीनी या मधु , कुछ पुदीने और तुलसी की पत्तियां (4 से 5), डाल देंगे और सभी को क्रश कर लेंगे। अब हम गिलास में ठंडा पानी, बर्फ के टुकड़े और कुछ नींबू के टुकड़े डालकर चम्मच से मिला लेंगे।

(4) खीरे का पेयः–

सर्वप्रथम हम गिलास में खीरे के कुछ टुकड़े, पिसी हुई चीनी या मधु स्वाद अनुसार, एक चम्मच नींबू का, कुछ पुदीने और तुलसी की की पत्तियां (4 से 5) डालकर उसे क्रश कर लेंगे। अब हम उसमें ठंडा ,पानी बर्फ के टुकड़े ,नीबू के टुकड़े डालकर चम्मच से चला लेंगे।

(5) नींबू, काली मिर्च,सौंफ का पेय–

सर्वप्रथम हम एक गिलास में एक चम्मच नींबू का रस, कूटी हुई काली मिर्च एक चौथाई चम्मच, पिसी हुई सौंफ आधा चम्मच, पिसी हुई चीनी या, कुछ पुदीने और तुलसी की पत्तियां (4 से 5), ठंडा पानी, बर्फ के टुकड़े और नींबू के छोटे टुकड़े डालकर चम्मच से चला लेंगे।

(6) ग्लूकोन–नींबू पेयः–

सर्वप्रथम एक गिलास में हम एक चम्मच नींबू का रस ,दो बड़े चम्मच ग्लूकोन–डी या सी , पिसी हुई चीनी या मध्य आवश्यकता अनुसार, कुछ पुदीने और तुलसी की पत्तियां, ठंडा पानी, बर्फ के टुकड़े और कुछ नींबू के टुकड़े डालकर चम्मच से चला लेंगे।

हमारे 6 तरह के ग्रीष्म ऋतु पेय तैयार हो गए। (सामग्रियों को आप अपने अनुसार ले सकते हैं)।

(स्रोतः यू ट्यूब–किरण उपाध्याय की रसोई) ❐

बोलो जिंदगी

के समस्त पाठकों को

अक्षय तृतीया

की

हार्दिक शुभकामनाएँ

मेल बॉक्स

बोलो जिंदगी

के पाठक हमसे सीधा सम्पर्क करें।

नीचे दिये गये ई-मेल के माध्यम से
हमे बतायें कि उन्हें कौन सा आलेख
ज्यादा पसंद आया।
क्या कमियां हैं
और उनके क्या सुझाव हैं।

E-mail : bolozindagi@gmail-com